अप्रैल, 1985 वर्ष 20 ❋ अंक 10 मूल्य 1.35

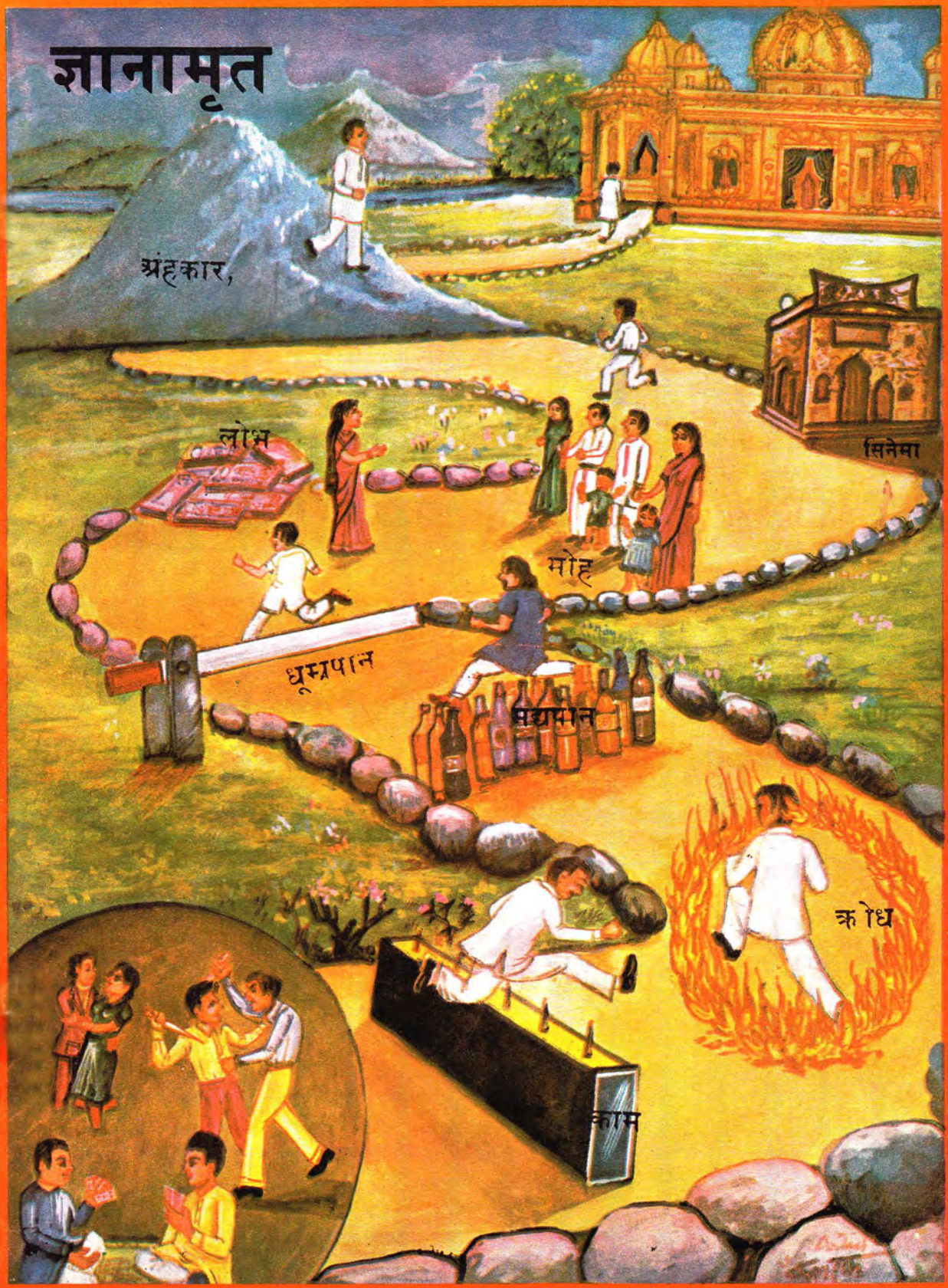

भोपाल में राजयोग भवन का उद्घाटन करती हुई राजयोगिनी ब्र. कु. प्रकाशमणि जी।

पटना में विश्व शान्ति महासम्मेलन का उद्घाटन बिहार के राज्यपाल डा. ए.आर. किदवाई जी कर रहे हैं। ब्र. कु. निर्माल पुष्पा तथा ब्र. कु. दादी निर्मलशान्ता जी साथ में हैं। (दाएं चित्र में) ब्र. कु. सुदेश सम्मेलन में राजयोग की अनुभूति सर्वआत्माओं को करा रही हैं

इन्दौर में युवाउत्थान समारोह उद्घाटन करते हुये म.प्र. के राज्यपाल प्रो. के.एम. चांडी जी।

राजोरी गार्डन (नई दिल्ली) में डाक्टरों के स्नेह मिलन के अवसर पर ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टवी नारायण जी सम्बोधित करते हुए।

बम्बई में ब्रै.कु. नलिनी जी राष्ट्रीय केमिकल एण्ड फार्टिलाइज़र के मैनेजिंग डायरेक्टर भ्राता दुलीप सिंह जी को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

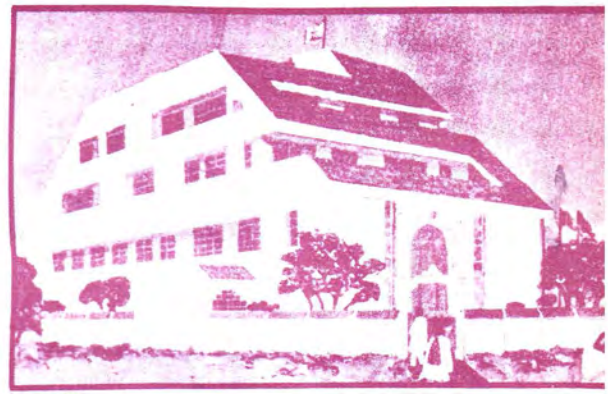

भोपाल में नव निर्मित 'राजयोग भवन'।

मण्डी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल जी।

Regd. No. 10563/65-D, (E)—70

भोपाल में राजयोग भवन के उद्घाटन अवसर पर सर्वधर्म सम्मेलन में मंच पर विराजमान हैं (बाएं से) ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि, ब्र.कु. मोहिनी, फादर ई.डी. सूजा तथा भ्राता भगवान सिंह सलारी जी।

गांधी नगर में 'राज्य अधिकारीगण सम्मेलन' में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. जयन्ती जी।

भुबनेश्वर में पत्रकार सम्मेलन रखा गया। ब्र.कु. रमेश जी, तथा ब्रा.कु. बहनों के साथ पत्रकार सेवा केन्द्र पर दिखाई दे रहे हैं।

अमृत-सूची

१. एक पहेली को जानने में ही सर्व समस्याओं का हल। १
२. सेवा और सेवा भाव (सम्पादकीय) २
३. कर्मयोग-सर्वश्रेष्ठ कला ५
४. तुम नये विश्व की आशा हो। (कविता) ८
५. विश्व बन्धत्व (चिन्तन) ९
६. राजयोग व्यसन मुक्ति का सरल मार्ग। १०
७. युवक रे। (कविता) १२
८. सेवा समाचार (चित्रों में) १३
९. एक मनुष्य को संवारने से संसार को संवारने की प्रक्रिया प्रारम्भ (कहानी) १५
१०. समाचार (चित्रों में) १७
११. प्रीत की रीति २०
१२. समस्याओं के घेरे में २१
१३. सम्पूर्णता की चाह २३
१४. अति शक्तिशाली वस्तु कौन-सी ? २४
१५. आत्मचिन्तन ही क्यों ? २५
१६. ईश्वरीय सौगात २८
१७. गीत २९
१८. आध्यात्मिक सेवा समाचार ३०

'एक पहेली' को जानने में ही सर्व समस्याओं का हल

भोपाल में राजयोग भवन का उद्घाटन एवं जनजागृति आध्यात्मिक सम्मेलन

—ब्र० कु० प्रकाशमणि

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अरेरा कालोनी स्थित नवीन राजयोग भवन के उद्घाटन के साथ जन जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन का शुभारंभ हुआ।

आबू पर्वत से पधारी मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी ने सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में कहा कि—भौतिक साधन सम्पन्न होने के बावजूद भी मानव का नैतिक पतन होता जा रहा है, वह देह अभिमान के वशीभूत होने के कारण अपनी चरित्र रूपी पूंजी खो चुका है ! अतएव यदि वह सिर्फ एक पहेली जान जाए कि मैं शरीर नहीं अविनाशी आत्मा हूँ, ज्योति स्वरूप परमात्मा की संतान हूँ, तो अवश्य ही सर्व दुःखों व समस्याओं का हल हो जाए !

यह राजयोग भवन इसी उद्देश्य—विश्व को शांति की राह दिखाने हेतु बनाया गया है जिसके माध्यम से स्वयं परमपिता परमात्मा का ज्ञान दिया जा रहा है। अतः हर नर-नारी यदि इस ज्ञान यज्ञ में अपने विकारों की आहुति दे डाले तो वह अवश्य स्वर्ग चल सकता है।

ब्र० कु० संस्था के प्रमुख वक्ता व संपादक ब्र० कु० जगदीश जी (देहली) ने कहा कि आज का मानव उतार-चढ़ाव के संघर्ष से गुजर रहा है वह सत्य मार्ग पर दृढ़ निश्चय कर कदम नहीं बढ़ाता। क्योंकि बार-बार बुरी आदतें छोड़ने के स्वयं से वायदे कर भूल जाता है या बहाने बनाकर टाल देता है जिसका कारण है वह विपरीत स्थिति, समाज, राजनीति आदि के प्रभाव में आ जाता है क्योंकि उसमें देहअभिमान है जबकि उसे आत्मिक दृढ़ता से संकल्प कर अवगुणों को स्वाह करनी चाहिए।

ब्र० कु० ब्रजमोहन जी (सम्पादक प्यूरिटी देहली) ने कहा कि हमें श्रेष्ठ कर्मों की पूंजी जमा करना चाहिए क्योंकि आत्मा कर्मों की ही पूंजी ल जाती है। यही दुख-सुख का आधार।

ग्याना के उच्चायुक्त स्टीवनारायण जी ने कहा कि भोपाल में राजयोग भवन का निर्माण भौतिक प्राप्ति अर्थ नहीं वरन् विश्व को शांति प्रदान करने के उद्देश्य से हुआ है तथा मुझे विश्वास है इस जन-जागृति सम्मेलन द्वारा अवश्यमेव जन-जन में जागृति आएगी।

बम्बई से पधारे भ्राता रमेश शाह ने कहा कि इस प्रकार के राजयोग भवनों का निर्माण, आध्यात्मिकता को तीव्रता से फैलाने के उद्देश्य से सम्पूर्ण भारत के अनेक स्थानों पर किया जा रहा है। जिसमें पवित्र मन से अर्जित पवित्र धन लगा है तथा यह सर्व के स्नेह, त्याग व मेहनत से बने हैं।

इसके अतिरिक्त सर्व धर्म सम्मेलन, न्यायविद् सम्मेलन, नारीजागृति सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

सेवा और सेवा भाव

ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के द्वारा जन-जन का कल्याण करने के लिए जब केन्द्र स्थापित होने लगे तो बाबा ने उन्हें नाम दिया—'सेवा केन्द्र' (Service Centres)। ये सब ईश्वरीय विश्वविद्यालय रूपी वृक्ष की थीं तो शाखाएँ-उपशाखाएँ-प्रशाखाएँ ही परन्तु ये शब्द यदि प्रयोग होते भी रहे तो गौण रूप से; मुख्य रूप से तो इन्हें 'सेवा-स्थान' ही कहा जाता रहा। यद्यपि आगे चलकर जब सरकार अथवा प्रचार-साधनों (Media) के प्रतिनिधियों से बात करते समय इन्हें 'शिक्षा-स्थान' (Educational Centres) की भी संज्ञा दी जाती रही ताकि उन्हें यह मालम हो कि यहाँ ज्ञान की शिक्षा होती है तथापि उन केन्द्रों की रूप-रेखा और वहाँ पर रहने वाले समर्पित बहन-भाइयों का मनोभाव तथा वहाँ ईश्वरीय कार्य में सहयोग देने वाले बहन-भाइयों की भी मानसिक वृत्ति तो सेवा ही की बनी रही। जैसे यज्ञ करने वाले लोग आहुति डालते समय कहते हैं—'इदं अग्नाय इदं न मम्' (ये अग्नि के लिए है; मैं ये अग्नि को समर्पित करता हूँ, ये मेरा नहीं है) वैसे ही यहाँ सभी का यही संकल्प बना रहता कि हमारे ये कर्म सेवा पुष्पों के रूप में शिव बाबा को समर्पित हैं; इसमें हमें अपने लिए कुछ (मान, यश, सुविधा, सुख इत्यादि) नहीं चाहिए। गोया सेवा के साथ त्याग की भावना भी सदा साथ-साथ बनी रही।

बाबा ने इन केन्द्रों को 'सेवा-स्थान' इसलिए भी कहा कि जन-जन को यह मालूम हो कि सेवा रोगियों की, ग़रीबों की, अपाहिजों की, विधवाओं की, आपदा से पीड़ित लोगों की तथा अन्य कई प्रकार की भी होती है परन्तु सेवा का वास्तविक स्वरूप तो मनुष्य के जीवन को श्रेष्ठ, आत्म-निर्भर और आत्मविश्वास से युक्त बनाना है क्योंकि पिछले लगभग २००० वर्षों में अन्य प्रकार की सेवा होते रहने पर भी वह समस्या तो समूल नष्ट हुई नहीं बल्कि दुःखी और पीड़ित लोगों की संख्या बढ़ती ही गई। अतः ईश्वरीय शिक्षा को ही सेवा का समर्थ, सफल और सत्य स्वरूप बताने के लिए ये केन्द्र फिर भी 'ईश्वरीय सेवा-स्थान' के नाम से जाने जाते रहे।

अन्य धार्मिक स्थानों में जो प्रवचन करने वाले, आचार्य वर्ग या पण्डित महोदय होते हैं, उन्हें लोग स्वयं से बहुत महान् मानकर उनका वन्दन-नमन करते हैं; उनमें से कई लोग स्वयं को उच्च स्थानीय मानकर अभिमानी बन जाते हैं, परन्तु बाबा ने पहले ही से हम लोगों के जीवन में यह दृष्टिकोण पक्का कर दिया कि हमारा यह अलौकिक जन्म ईश्वरीय सेवा के निमित्त है और हमारा तन, मन, धन अपने लिए न होकर, शिव बाबा द्वारा बताई हुई सेवा में समर्पित है। अतः यदि ज्ञान सुनने के लिए आगन्तुक किसी व्यक्ति ने कभी उल्टे-सीधे प्रश्न किये, कभी गलत दृष्टिकोण के कारण तिरस्कृत भी किया तो भी स्वयं को एक सेवक मानते हुए उसके कल्याण के लिए ब्रह्माकुमारियों व ब्रह्माकुमारों के मन में सेवा का भाव बना ही रहा। अन्य धार्मिक स्थानों पर तो बर्तन साफ़ करने, झाड़ लगाने इत्यादि को ही 'सेवा-कार्य' माना जाता है परन्तु किसी को ईश्वरीय ज्ञान रूपी अमृत देकर उसकी बुद्धि में अनमोल ज्ञान-रत्न भरकर उसे अपने से भी महान बनाने के कार्य को भी बाबा ने सेवा का नाम दिया हुआ है। ऐसी सेवा करने वाला भी बर्तन माँजने, कपड़े धोने, झाड़ू लगाने या अन्य कोई स्थल काम करने से भी इन्कार न करे—यह भाव बाबा ने सभी में भर दिया—यह अलग बात है कि जिसको जिस कार्य में अधिक उपयुक्त माना गया, उसे वही कार्य दिया गया। तन, मन या धन से दूसरों का आध्यात्मिक उत्थान

करने में जो कोई भी भाग लेता है, वह 'सेवक' (Servant) ही कहलाया। यहाँ तक कि बाबा ने अपने बारे में भी कहा कि—मैं आपका आज्ञाकारी सेवक हूँ (Iam your most obedient Servant) हूँ जो कि ईश्वरीय शिक्षा द्वारा पावन बनाने की सेवा करता हूँ संसार में तो उच्चाधिकारियों के बंगलों में 'सेवा-कार्य' करने वालों के क्वार्टर (Servant Quarters) अलग बने रहते हैं लेकिन यहाँ हर कोई स्वयं को एक 'सेवक' मानने में ही हर्ष अनुभव करते। बाबा भी सेवा को ऊँचा मानते हुए इसे ब्रह्मा-वत्सों के 'सिर का ताज' घोषित करते रहे।

यों अंग्रेज़ों के राज्य काल में बड़े-से-बड़ा अधिकारी भी स्वयं को 'आपका आज्ञाकारी सेवक' (Your obedient servant) कहता था और उच्चाधिकारी के पद के लिए जो चुनाव किया जाता था उसे आई० सी० एस० (Indian civil service) कहा जाता था परन्तु उनमें भी भाव तो सेवा का नहीं रहता था। बाबा ने हमें जो सेवा करने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और योग रूप साधन दिये हैं उनके साथ-साथ सेवा का भाव भी दिया और त्याग की भावना भी क्योंकि यदि भाव सेवा का न हो और यदि जीवन में त्याग भी न हो तो फिर सेवा 'सेवा' नहीं रह जाती। वह अपने लिए मान, यश, स्थान, सुविधा प्राप्त करने का तरीका या अपने अनेक प्रकार के प्रलोभनों को तृप्त करने का एक तरीका बनकर रह जाता है।

अतः यह बात हमारे मन पर एक पत्थर की लकीर की तरह से अमिट बनकर अंकित होनी चाहिए कि यदि सेवा का कार्य करते समय हमारे मन में त्याग और समर्पण भाव नहीं है तो बाबा ने 'सेवा' की जो परिभाषा की है उसके अनुसार वह सेवा की परिगणना में नहीं आती। उससे कुछेक का कल्याण हो जाए—ऐसा भी हो सकता है परन्तु उससे हमारी तृष्णाएँ बढ़ेंगी ही। मान लीजिए कि कोई व्यक्ति यह समझता है कि ये सेवा भी मैं कर लूँ, वह सेवा भी मैं कर लूं और तीसरी, चौथी, पांचवी या दसवीं प्रकार की जो सेवा है, वह सब मैं ही कर लूं ताकि जब समाचार छपे या जब मंच से परिचय दिया जाए तो मेरा परिचय सूर्य के समान प्रकाशमान हो। तो क्या इससे यह स्पष्ट नहीं है कि इस व्यक्ति के मन में लोभ की आग भड़क रही है। यश की कामना ने इसे अपनी लपेट में ले लिया है और वह भी इस दर्जे तक कि ये दूसरों को अवसर से वंचित रखने के लिए और उनके साथ अन्याय करने को भी उद्यत है। कोई सांसारिक व्यक्ति लोभ-वश धन हड़पना चाहता है या कुर्सी पर झपटना चाहता है और यह व्यक्ति 'सेवा' नाम का अच्छा शब्द प्रयोग करके मान मर्तबा और महिमा के लोभ के वशीभूत हुआ दूसरों का भी शोषण करना चाहता है। स्पष्ट है कि यह तो लोभ रूपी मीठे विकार की चाशनी चाटने वाली बात है। दूसरे जो सेवा करते भी हों उनसे भी कराके नाम अपना कर लेना और जो नाम पदा करने वाली कोई एक सेवा न भी की हो उससे किसी का यश होता देख मन में ईर्ष्या व द्वेष का पदा होना और उसको सहयोग देने से इन्कार कर देना—यह सेवक के लक्षणों में नहीं है। इसी प्रकार यह कहकर कि मेरी इस सेवा में रुचि है, फलां दूसरी सेवा में भी रुचि है, सब कार्य अपने हाथ में पकड़ने का कोशिश करना—ये भी सेवा की इच्छा नहीं, लोभ और लालसा है और इसमें करुणा और स्नेह का अभाव है। इसी तरह कोई व्यक्ति किसी काम को हमसे भी यदि अच्छा कर सकता है तो भी उस कार्य को पकड़े रखना और दूसरों को करने न देना सेवा की भावना से रहित प्रयास है जिसमें भी अपनी ही कामना की पूर्ति समाई हुई है।

बाबा ने सेवक के लक्षणों में नम्रता, मधुरता, त्याग, सहयोग की भावना इत्यादि गुण बताये हैं और कामनाओं के त्याग पर बल दिया है। और अपने से भी दूसरों को आगे बढ़ाने उन्हें ट्रेनिंग देकर शिव बाबा की प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनाने की भावना पर बल दिया है। बाबा को ऐसा ही सच्चा सेवाधारी (Serviceable) बच्चा प्रिय है।

हमें यह याद रखना चाहिए कि यदि कोई

सेवा का नाम लेकर छीना-झपटी करता है तब तो दूसरों के मन को अपने पाँव के नीचे रोंदते हुए दैवी जगत में संघर्ष; मानसिक हिंसा और हलचल की लहर पैदा करता है। वह सेवा (Service) नहीं बल्कि 'अप सेवा' (dis-service) अथवा 'आप सेवा' (Service for—not service to—one's own self)। इस सेवा में तो हिसाब-किताब बनता है। ब्राह्मणों का आशीर्वाद मिलने की बजाय उनकी आह निकलती है, अपने मन में भी अहंकार पलता है और शोषण, अन्याय तथा यश-कामना दिनोंदिन पनपते हैं और स्थिति उत्तरोत्तर योग-युक्त होने की बजाय रेत के ढेर पर खड़ी बिल्डिंग की तरह धसती चली जाती है। और, वह व्यक्ति स्वयं को कितना ही बड़ा मानता रहे परन्तु लोग उसके बारे में मन में यह समझते हैं कि माया रूपी चुहिया फूक मार-मारकर इस बेचारे को काट रही है और इसे मालूम तक नहीं होता और इसे कोई बताये तो इसे प्रिय नहीं लगता।

हाँ, यदि भावना सेवा ही की हो और यश का लोभ न हो तब अगर अधिकाधिक सेवा भी की जाय तो यह सौभाग्य की बात है।

बाबा ने सेवाधारी के लिए यह स्पष्ट किया हुआ है कि उसे कोई भी कार्य दिया जाए (चाहे वह बाह्य जगत् में ऊंचा माना जाता हो या नीचा), वह उसे सेवा ही समझकर खुश होते हुए कर ले। वह यह न कहे कि—"बस, मैं क्या यही काम करने लायक रहा हूँ ?" उसे एक स्थान से दूसरे स्थान, एक शहर से दूसरे शहर कहीं भी भेज दिया जाए तो वह सदा उद्यत (ever-ready) रहे क्योंकि न तो वह किसी स्थान या सम्पत्ति का मालिक है और न ही किसी चीज़ से उसका लगाव है बल्कि सेवा ही उसका मनोरथ है और जितना वह कर सकता है, जो भी उससे हो सकता है, जो भी उसकी योग्यता है, उसे उसने ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया है। इस प्रकार की तथा अन्य सेवा-सम्बन्धी मर्यादाएँ हमारे लिए जानना ज़रूरी है क्योंकि सेवा तो हमारे ४ अध्ययन क्षेत्रों में से एक क्षेत्र है अथवा विषय है। सेवा की इन मर्यादाओं का पालन न करते हुए यदि कोई सेवा (तथाकथित सेवा; So-called service) करता है तो सूक्ष्मता से देखने पर यह स्पष्ट मालूम होगा कि यद्यपि उस व्यक्ति का सेवा-क्षेत्र में यश बढ़ रहा है तथापि अनेक प्रकार की कामनाओं की तृप्ति ही उसका स्वभाव बन जाने के परिणाम स्वरूप उसकी अवस्था में उन्नति नहीं हो रही। क्योंकि वह 'मेरे' और 'तेरे' के भाव में तथा अन्य कई अमर्यादाओं की दलदल में ऐसा तो फँस चुका है कि उसे वहाँ से निकालने का यत्न करने पर भी वह निकालने वालों को सहयोग नहीं देता।

बाबा की बताई हुई बातों को यहाँ हमने इसलिए लिखा है कि योग की रसानुभूति की इच्छा करने वालों को अन्य अनेक प्रकार की ज़ंजीरों के साथ-साथ इन ज़ंजीरों से भी छूटने का यत्न करना चाहिए।

—जगदीश

'मानव पुनर्जन्म' पर अन्तर्राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता

बम्बई—प्राप्त समाचार के अनुसार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा "मानव पुनर्जन्म" विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। स्पर्धा में सहयोगी हैं भारत साधू समाज देहली तथा अमेरिका के एसोशियेशन आफ पास्ट लाइफ रिसर्च एण्ड थेरापी। निबन्ध हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में लिख सकेंगे। निबन्ध की तीन टाइप की हुई कापी ३१/७/८५ से पहले भेजनी होंगी। निबन्ध में ४ हजार से ज्यादा शब्द नहीं होने चाहिए। प्रथम पुरस्कार रु० ७५००/- द्वितीय पुरस्कार रु० ५०००/- तथा तृतीय पुरस्कार रु० ३०००/- का होगा। तीन आश्वासन पुरस्कार रु० १०००/- के होंगे। निबन्ध बम्बई कोलाबा सेन्टर पर भेजना होगा। सेन्टर का पता है—"ब्रह्माकुमारीज़, २५ गीतांजली, रेडियो क्लब के पीछे, कोलाबा, बम्बई-४०००० ५। फोन—२३०४९४

कर्म योग–सर्वश्रेष्ठ कला

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

प्रति पल कर्म करता हुआ प्राणी, कर्म बन्धनों की जंजीरों में जकड़ता जा रहा है। कहीं कर्म उसे सुख देते हैं, तो कहीं कर्मों की ज़िम्मेदारी उसे बोझ महसूस होती है। परन्तु न चाहते हुए भी मनुष्य कर्म में व्यस्त है। वह निष्क्रिय भी नहीं हो सकता क्योंकि मनुष्य की निष्क्रियता उसकी बुद्धि को भी निष्क्रिय बना देगी। मनुष्य को कर्म ही महान बनाता है, परन्तु तब, जबकि कर्म बन्धन न हो, बल्कि बन्धनों से मुक्ति का साधन हो।

हम कैसे ढंग से कर्म करें जो कर्म हमें कर्मातीत स्थिति की ओर ले चलें। कर्मातीत स्थिति अर्थात जहाँ सभी विकर्मों का बोझ समाप्त हो गया हो। कर्मातीत स्थिति अर्थात जहाँ कर्म करते हुए कर्त्ता, कर्म के प्रभाव से परे हो। जहाँ वह पूर्ण साक्षी भाव से कर्म करता हो। यह स्थिति कर्म को त्याग करके प्राप्त नहीं की जा सकती। परन्तु श्रेष्ठ कर्मों के बल से व प्रत्येक कर्म को योग-युक्त करने से आत्मा इस स्थिति को पा सकती है। **क्योंकि कर्मातीत होने से पूर्व विकर्माजीत होना आवश्यक है।** यदि कोई विकर्माजीत ही नहीं बनता तो उसके लिए कर्मातीत स्थिति को पाना बिना यान अन्तरिक्ष यात्रा करने जैसा ही है।

प्राय: योगाभ्यासी कर्म में संलग्न होते ही योग-मुक्त हो जाते हैं, कर्म की लिप्तता उन्हें पूर्ण व्यस्त कर देती है। वास्तव में कर्म में योग-युक्त रहना बहुत ही श्रेष्ठ व दिव्य बुद्धि द्वारा ही सम्भव है। और जो कर्म योग-युक्त होकर किया जाता है, वह अति महान बन जाता है तथा जन्म-जन्म के लिए यादगार बन जाता है। मन्द-बुद्धि प्राणी या साधारण बुद्धि वाला मनुष्य या अहंपूर्ण मनुष्य के लिए कर्मयोगी बनना आसमान छने जैसा है। प्रस्तुत है कुछ अनुभवी तथ्यों की चर्चा जिससे मनुष्य कर्म-योग का रसास्वादन कर सकता है।

"कर्म-क्षेत्र पर योग न रहना ऐसा ही है मानो बिना हथियार के युद्ध क्षेत्र पर जाना।" तो ऐसा योद्धा दुश्मन का सामना कैसे करेगा! यदि माया—दुश्मन को चुनौति देने वाले वीर बिना हथियारों के ही मैदान पर उतरेंगे तो माया के तीक्ष्ण तीरों का मुकाबला वे नहीं कर पायेंगे और निश्चय ही शाम को हार पहनकर वापिस आयेंगे। अत: प्रतिदिन हम विजयी रत्नों को विजय का आभास हो—इसके लिए योग के हथियारों से सज-धजकर ही हमें माया से युद्ध करने चलना है।

प्रत्येक कर्म का आनन्द लो

ईश्वरीय महावाक्य—"ड्यूटी को डाँस समझो।" प्रत्येक कर्म का आनन्द ग्रहण करो। कर्म चाहे छोटा हो या बड़ा। हाथ से करने का हो या बुद्धि से करने का। अति व्यस्त रहने का हो या धीमी गति का। उसे खेल की तरह करना सीखो। कर्म करने का अपना तरीका बदल दो। कर्म करते समय जो विचार मन को भारी करते हैं, उन्हें 'खेल की वृत्ति' धारण करके सरल कर दो। खुशी-खशी कर्म करो। कर्म उलझ जाने पर या बिगड़ जाने पर धैर्यता व सरल चित्त होकर उसे हल कर लो। कर्म उलझने पर मन को न उलझाओ'''यह अभ्यास हमें कर्म-बोझ से मुक्त करेगा व सहज ही हम योग-युक्त रह सकेंगे।

प्रत्येक कर्म से पूर्व योगाभ्यास

प्रत्येक कर्म प्रारम्भ करने से पूर्व यह अभ्यास डाल लो कि कम से कम एक मिनट योगाभ्यास करना है। ऐसा करने से शीतल मन से कर्म प्रारम्भ होगा। फिर कर्म के मध्य में थोड़ा सा योगाभ्यास

कर लें और फिर समाप्ति पर। यह सरल विधि तो प्रत्येक अभ्यासी अपना सकता है इससे कर्म करते हुए भारीपन नहीं महसूस होगा। यदि आपको संगठन में कार्य करना होता है तो भी आप स्वयं इसका उपाय निकाल लें। इससे दूसरे काम करने वालों की बातों का प्रभाव भी आप पर नहीं पड़ेगा बल्कि आपके सुन्दर वाइब्रेशन्स का प्रभाव ही उन पर पड़ेगा।

अमत वेले एक अभ्यास

प्रातः उठते ही शिव बाबा से रूह-रिहान करने के साथ-साथ यह अभ्यास करें कि अव्यक्त बाप-दादा आपके सामने आकर आपको 'विजय का तिलक' लगाते हैं और कहते हैं, "बच्चे, तुम युद्ध-क्षेत्र, कर्म क्षेत्र पर जाओ, मैं तुम्हारे साथ हूँ और विजय तुम्हारी ही है।" यह स्मृति व नशा, सारे दिन योग-युक्त रहने में मदद करेगा।

लौकिक कार्य में अलौकिकता भरो

अपने प्रत्येक लौकिक कार्य को "यज्ञ प्रति" समझ कर करो। तो उसमें अलौकिकता भर जाएगी। जबकि कार्य ही ईश्वर के प्रति होंगे तो उसमें आने वाली समस्याओं को भी ईश्वर स्वयं सहज कर देंगे। कर्मों में मेरे-पन का बोझ आत्मा को भारी करता है। और यह समर्पित भाव मन को हल्का करके ईश-प्रेम में मग्न कर देता है।

बोझ उठाये क्यों फिरते हो

मनुष्य जब सारा दिन काम करके घर लौटता है तो बोझ से दबा हुआ होता है। काम समाप्त हो जाता है, परन्तु बोझ रह जाता है। विभिन्न परिस्थितियों सहित वह घर में प्रवेश करता है और मन पर बोझ लिए ही सो जाता है। जिसका प्रभाव दूसरे दिन पर भी पूर्णतया पड़ता है।

परन्तु योगी का बोझ तो परमात्मा उठाता है। जिसके नाम से ही मनुष्यों के काम सफल हो जाते हैं, उसके अपने बच्चों के काम क्यों निष्फल होंगे। यह निश्चय योगी को योग-युक्त व बोझ-मुक्त रखता है। जबकि विश्व का बोझ हरने वाला हमारा अपना बाप है, तो हम बोझिल क्यों? जबकि भक्तों की भी बिगड़ी को बनाने वाला स्वयं हमारा परम मित्र है, तो हमारी बिगड़ी क्या नहीं बनेगी। अतः हे राजयोगियो,

"तुम तो प्रभु के बच्चे बन गये, बच्चों पर बोझ नहीं होता। बच्चे बने रहो और अपने परमपिता की सुख-दायिनी गोद में विश्राम करो।"

फिर भी यदि तुम अपने सिर पर किसी संकल्प का सूक्ष्म बोझ महसूस करते हो तो प्रतिदिन रात्रि को अपनी ही डायरी में शिव परमपिता के नाम एक पत्र लिख दो। पूरा समाचार लिख दो कि बाबा आज ये ये हो गया, ये ये बातें मुझे भारी कर गईं। आप पायेंगे कि आपका बोझ हर लिया गया है।

कर्मेन्द्रियों के रस का त्याग करो

प्रति पल होने वाले कर्मों का सम्बन्ध हमारी कर्मेन्द्रियों से है। यदि कर्मेन्द्रियों के रस में आत्मा लिप्त होगी तो देह से न्यारे-पन का अनुभव ही नहीं होगा। यदि मन को किसी भी कर्मेन्द्रिय का रस है तो मन मनमनाभव नहीं होगा। अतः आँखों का रस—देखने का, कानों का रस—सुनने का, मुख का रस—बोलने का, जीभ का रस—खाने का आदि आदि रसों से स्वयं को अलिप्त करो तो जीवन में ईश्वरीय रस भरता जाएगा। व्यर्थ सुनने व व्यर्थ बोलने की रुचि—योगी का लक्षण ही नहीं है। योगी तो अपने लक्ष्य में मग्न होता है। उसे इस विश्व में और कुछ दिखाई ही नहीं देता। अतः उसके संकल्प भी स्थिर रहते हैं, ऐसी आत्मा मानो कर्म निमित्त मात्र ही करती है, और सदा योग-युक्त रहकर कर्मातीत हो जाती है।

संगम युग पर स्वयं को व्यस्त न करो

दो युग तो बीत गये—छोटे-छोटे परिवार की पालना में व्यस्त रहते। यही तो समय है, प्रभु-मिलन का। और यदि इसमें भी स्वयं को सांसारिक प्राप्तियों के पीछे ही व्यस्त कर दिया तो क्या

इसे बुद्धिमानी कहेंगे ! क्योंकि अति व्यस्तता भी योग-युक्त होने में विघ्न ही है। **अतः यदि व्यस्त ही रहना है तो ईश्वरीय सेवा में रहो या ईश्वरीय-मिलन में व्यस्त रहो।** लौकिक कार्यों में व्यस्तता सम्पूर्ण भाग्य को अस्त-व्यस्त कर देती है। और जीवन दुविधा में भटका हुआ महसूस होने लगता है।

एक घटना का प्रभाव दूसरी पर न पड़े

दिनचर्या में अनेक घटनाएँ घटित होती हैं। एक घटना अपना प्रभाव मन पर छोड़ जाती है और स्वतः ही उसका प्रभाव आगे की घटनाओं पर पड़ता है। परन्तु ऐसी कोई भी घटना होने पर तुरन्त स्वयं को सम्भालना सीखो। कुछ ही क्षणों में ज्ञान-बल से स्वयं को फ्रैश कर लो। या अशरीरी-पन का अभ्यास कर लो तो घटना का प्रभाव हल्का होकर समाप्त हो जाएगा। यदि यह अभ्यास नहीं होगा तो एक बार विचलित हुआ मन अनेकों को विचलित करेगा और सदा अस्थिरता बनी रहेगी।

सरलचित्त होकर कर्म-क्षेत्र पर जाओ

सूक्ति है—"Be light and do light" अर्थात स्वयं भी हल्के रहो और अपने से दूसरों को भी हल्का रक्खो। यह सरलता ही योग को भी सरल करती है। चिड़चिड़ा स्वभाव योग मार्ग में भारी विघ्न है। तुरन्त अशान्त हो जाने वाला 'मनमना भव' कदापि नहीं हो सकता। ईश्वरीय महावाक्य व अनादि सिद्धान्त हैं—

☐ आप स्वयं हल्के होंगे तो आपसे दूसरे भी हल्के हो जाएगे—आपके सम्पर्क सम्बन्ध भी हल्के हो जायेंगे।

☐ स्वयं हल्के होंगे तो परिस्थितियाँ भी हल्की हो जाएंगी।

☐ स्वयं हल्के होंगे तो तुम्हारे कर्म-भोग व कर्म-बन्धन भी हल्के हो जाएंगे।

☐ स्वयं हल्के होंगे तो तुम्हारे विघ्न व समस्याएँ भी हल्की हो जाएंगी।

अर्थात योगी को सरलचित्त होना चाहिए। परन्तु कई पुरुषार्थी सोचते हैं कि विघ्न, समस्याएँ हल्की हों तब हम हल्के होकर योग में उड़। परन्तु यह असम्भव है। हल्के-पन से ही सब कुछ हल्का होगा।

कुछ भी बात होने पर स्वयं को हल्का कर दो। अधिक सोचने की प्रवत्ति योगी नहीं बनने देती। इस प्रकार हार-जीत, मान-अपमान, सफलता-असफलता में यदि मनुष्य हल्का रहना सीख जाए तो सहज ही वह योग युक्त रह सकता है।

ईश्वरीय परिवार से प्यार कर्मयोगी बनाता है

परमपिता से हमारा प्यार हमें योगी बनाता है परन्तु ईश्वरीय परिवार की सभी आत्माओं से प्यार हमें कर्मयोगी बनाता है। क्योंकि यदि हमारे साथियों के प्रति हमारा दृष्टि कोण महान नहीं है, या हमारा व्यवहार अच्छा नहीं है तो हमारे मन में सदा ही विघ्न रहेगा। हमारी यदि अवगुणी दृष्टि है तो मन सदा ही दुखमय रहेगा। यदि हमारे मन में दूसरों के लिए सत्कार की भावना नहीं है तो मन सदा अपमान से भरा रहेगा। यदि हमारा चित्त अभिमान के प्रकोप से पीड़ित है, तो वह चैन की श्वांस नहीं ले सकेगा और फल स्वरूप विचलित हुआ मन योग-युक्त नहीं रह पायेगा। **अतः संगठन में समाने की शक्ति धारण करने वाले अभ्यासी और मन के दृष्टि कोण को विशाल बनाने वाले पुरुषार्थी ही कर्म योगी की श्रेष्ठतम सीढ़ी पर चढ़ सकते हैं।**

कर्म कराने की कला सीखो

योग मनुष्य को कर्म करने की कला तो सिखाता ही है, परन्तु साथ-साथ प्रशासन-कुशल भी बनाता है। योगी यह भी जानता है कि दूसरों से कर्म कैसे करायें। अधिकार से या प्यार से ? बन्धन से या पूर्ण स्वतन्त्रता से ? रोब से या रूहाब से ?

क्योंकि एक राजयोगी का स्वयं के मन पर कन्ट्रोल होता है, अतः सहज ही दूसरों पर भी उसका कन्ट्रोल हो जाता है। क्योंकि योगी भगवान का आज्ञाकारी व वफ़ादार होता है अतः सभी

उसके आज्ञाकारी व वफ़ादार बने रहते हैं। योगी क्योंकि स्वमान में रहता है, अत: सहज ही वह सभी के सम्मान का पात्र बन जाता है। फलस्वरूप एक राजयोगी को कर्म-क्षेत्र पर कष्ट नहीं होता। सभी उसे सहयोग देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। उसके सहयोगी बनने को वे प्रभु के सहयोगी बनने जैसा समझते हैं।

इस प्रकार कर्मक्षेत्र पर यदि हम अपने साथियों के दिलों पर शासन करने की कला सीख जाएंगे तो उन पर तो स्वत: ही शासन हो जाएगा। दूसरों से काम लेते हुए यदि हम उनकी कठिनाइयों व आवश्यकताओं का भी ध्यान रक्खेंगे तो वे भी हमारी सुविधाओं का ध्यान रक्खेंगे। संगठन में प्रशासक का अहं भाव, दूसरों को उससे दूर ले जाता है, उनमें अस्नेह व असहयोग का बीज डालता है। हमारी स्वयं की कर्मठता उन्हें भी कर्मठ होने की प्रेरणा देती है। अत: यदि कर्म कराने की कला में हम निपुण होंगे तो कर्म की ज़िम्मेदारी हमें बोझिल नहीं करेगी और सहज ही हम योग-युक्त रह सकेंगे।

तो हे भगवान की छत्रछाया में सुरक्षित रूहों,

हम ही यदि कर्म योगी नहीं बनेंगे तो भला और कौन बनेगा ! हमारे कर्म ही तो भगवान को प्रत्यक्ष करेंगे, परन्तु यदि हम ऊँचे स्टेज पर बैठकर कर्म नहीं करेंगे, तो हमारे कर्मों को लोग कैसे देख सकेंगे। हम यदि कर्म योगी नहीं बनेंगे तो हमारे कर्म दिव्य व अलौकिक कैसे होंगे। अत: हे कर्मातीत स्थिति की लम्बी यात्रा पर चलने वाले राहियों···ध्यान दो, अपनी राह निकालो, शिकायतें न करो, कर्म-योगी बनो और महावीर बनो। □

"तुम नये विश्व की आशा हो।"

ब्र० कु० प्रकाश, भोपाल

तुम नये विश्व की आशा हो,
तुम प्यासों की पिपासा हो।
उठो लाल, लाली भर दो,
खुशियों से हर डाली भर दो।
नहीं कोई दिशा, जिनके जीवन में,
और कलुषा, तमसा छाई मन में।
सद् दिशा के दिग्दर्शन से,
जीवन उनका पावन कर दो।
कितने दीप हैं बुझे पड़े,
कितने तिमिर में दबे पड़े।
थोड़ी-सी किरण उन्हें दे दो,
अनुकूल वरण उन्हें दे दो।
तुम निर्मल नीर निर्झर हो,
तुम्हीं गोपाल, तुम्हीं गिरधर हो।
उठाकर पर्वत विकारों का,
करो अंत दुराचारों का।
लाडले तुम शिवबाबा के,
सिकीलधे बापदादा के।
यदि हो तुम अच्छे बच्चे,
दिखलाओ सबूत, सपूत बनके।
बाबा की प्रत्यक्षता तभी होगी,
जब तुममें कमी नहीं होगी।
तो आओ कुछ ऐसा काम कर,
बाबा का ऊंचा नाम करें।
नित नयी-नयी उड़ान भरें,
अथक चलें न कभी विश्राम करें।

चिन्तन

विश्व बन्धुत्व

ले०—ब्र० कु० ओमप्रकाश मसुरहा, बांदा
बी० ई० (आनर्स)

एक बार की बात है, स्वामी रामतीर्थ नामक महान युवा सन्त विदेश यात्रा पर थे। वे जिस पानी के जहाज से यात्रा करने वाले थे, उस तक उन्हें भेजने करीब एक हजार लोग गये थे। वहां उन्होंने उनका खूब सत्कार किया व भाव भीनी विदाई दी।

इस दश्य को उसी जहाज में बैठे एक अमरीकी सज्जन देख रहे थे। जब जहाज वहां से बिदा हुआ और कुछ दूर चला तो ध्यान से उनके स्वागत सत्कार को देख रहे उस सज्जन ने स्वामी जी के बारे में उत्सुकतापूर्वक जानना चाहा। वे मन में सोच रहे थे कि जिसे एक हजार लोग भेजने आये हैं, वह वास्तव में बहुत बड़ा आदमी होगा, सम्पन्न भी होगा। उसके साथ माल असबाब भी खूब होगा। किन्तु जब उन्हें स्वामी जी का सामान इत्यादि दिखाई नहीं दिया तो उत्सुकतावश उन्होंने इशारे से पूछा, "श्रीमन्, आपका सामान ?" स्वामी जी ने भी हाथ से इशारा कर बताया "वह है !" वहां तो बस एक पोटली ही थी।" उन्होंने बताया कि बस इतना ही अपना सामान है।

आगे वार्ता करते हुये उस सज्जन ने पूछा "आप किधर जा रहे हैं।" स्वामी जी ने संक्षिप्त उत्तर दिया, "अमेरिका जा रहा हूं।" उन्होंने कहा, "अरे ! अमेरिका में तो मैं भी रहता हूं।" फिर उन्होंने अगला प्रश्न किया, "अमेरिका में आप कहां जायेंगे।" स्वामी जी बोले "शिकागो जायेंगे।" तो अमेरिकी सज्जन बोले "अरे ! शिकागो में तो मैं भी रहता हूं। उन्होंने आगे पूछा "वहां आपके कौन रहते हैं ?" स्वामी जी ने कहा, "मेरे सगे भाई रहते हैं।" अमेरिकी सज्जन ने पूछा "वे शिकागो में किस स्थान पर रहते हैं ? ठीक-ठीक पता ठिकाना क्या है ?" स्वामी जी ने कहा, "भाई, ये तो मुझे नहीं मालूम।" अमेरिकी सज्जन ने जानना चाहा, "वे क्या काम करते हैं।" स्वामी जी ने कहा "ये भी मुझे नहीं मालूम।" अमेरिकी सज्जन ने अगला सवाल किया "अच्छा ये बतायें उनका शुभ नाम क्या है ?" स्वामी जी ने कहा "ये भी मुझे नहीं मालूम।" वे अमेरिकी सज्जन बहुत असमंजस में थे। उन्होंने कहा "श्रीमन्। मैं समझ नहीं पा रहा। इतना बड़ा शिकागो नगर जब आपको यह ही नहीं मालम उनका निवास कहां है, वे क्या काम करते हैं, उनका नाम भी आपको पता नहीं है, तो क्या ऐसी स्थिति में आप उन्हें ढूंढ़ पायेंगे ?" स्वामी जी का संक्षिप्त उत्तर था "अवश्य !" अमेरिका के सज्जन को और भी कुतूहल हुआ। उन्होंने असमंजस भरे शब्दों में कहा "ताज्जुब है। नाम आपको मालूम नहीं। भाई आपके क्या काम करते हैं मालूम नहीं, कहाँ रहते हैं मालूम नहीं, श्रीमन्। मैं बहुत कठिनाई का अनुभव कर रहा हूं। मुझे समझ नहीं पड़ रहा है कि आप उनसे कैसे मिल सकेंगे ! आप ही कुछ बतायें तो कि आखिर आप उनसे कैसे मिलेंगे। यह भाई आपके हैं कौन ?"

स्वामी जी ने तपाक से उत्तर दिया "वह आप ही तो हैं" अच्छा आप बताइये "आप अमेरिका में रहते हैं न "उन अमेरिकी सज्जन ने कहा "हां" स्वामी जी ने कहा "आप शिकागो में रहते हैं न ?" उन्होंने कहा "हां" स्वामी जी ने कहा कि मैं आपको शकल से पहचान रहा हूं कि नहीं।" तो अमेरिकी सज्जन बोले, "हां।"

स्वामी रामतीर्थ जी ने अपने आत्म-विश्वास और हृदयग्राही विशुद्ध प्रेम की तरंगों में बहाकर उन्हें इस बात का अनुभव करा दिया कि "हम, आप वास्तव में आत्मायें हैं, एक पिता परमात्मा की अविनाशी सन्तानें हैं, आपस में भाई-भाई हैं।"

इस वार्ता का इतना सुखद परिणाम हुआ कि

(शेष पृष्ठ ११ पर)

राजयोग व्यसन मुक्ति का सरल मार्ग

डा० ओमप्रकाश गोयल, जालना

वर्तमान काल में मनुष्य चारों आर से व्यसनों में घिरा हुआ है, विश्व की जनसंख्या का ८७ प्रतिशत मानव व्यसनों का आदि है, जैसे गांजा, चरस, एल० एस० डी०, सिगरेट, तंबाकू, शराब, जुआ, वैश्यागमन, इत्यादी इत्यादी। विश्व का करीब करीब प्रत्येक मनुष्य इन सब चीजों से त्रस्त है, जब वह इन व्यसनों की शुरूआत करता है तब उसे बड़ा मजा आता है, लेकिन जब वह व्यसन उसकी आदत बन जाता है तब उसकी जान पर बन जाता है, और वह लाख कोशिश करने पर भी उनसे मुक्त नहीं हो पाता। इसका मुख्य कारण है मनुष्य में आत्म शक्ति (Will-power) का अभाव। मनुष्य अपने आपको एक भौतिक वस्तु समझता है और वह भौतिक वस्तुओं के ही वश में चला जाता है। वह यह भूल गया है कि, उसके अंदर एक अभौतिक वस्तु और है जिसके कारण यह भौतिक वस्तु चलती है। इसी अभौतिक शक्ति अर्थात आत्मा (Soul) को भूल जाने के कारण वह अपनी आत्म-शक्ति (Will-power) खो बैठा है, और जब तक किसी के पास आत्म-शक्ति (Will-Power) न हो वह किसी भी विकार से छुटकारा नहीं पा सकता है।

मैं इस विषय में कुछ अपना अनुभव बतलाना चाहता हूँ। वर्तमान समय में मैं एक डॉक्टर हूँ, लेकिन जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तभी से मुझे तंबाकू खाने की लत लग गई थी, उसके कुछ दिनों पश्चात मैंने धीरे-धीरे सिगरेट पीना भी शुरू कर दिया, फिर धीरे-धीरे शराब पीना भी शुरू कर दिया और दो-तीन वर्षों में ही मैं इन चीज़ों का आदि बन गया। शराब की मुझे बहुत ज्यादा लत नहीं थी, लेकिन सिगरेट मैं दिन में एक से दो पेकेट तथा तंबाकू के २०-२५ पान तक खाता था। यह सिलसिला करीब दस साल तक चला और इस बीच मैंने कई बार इन आदतों को छोड़ने की कोशिश की लेकिन मैं नाकामयाब रहा। परिणाम स्वरूप मुझे उच्च रक्त दाब (High-Blood-Pressure) हो गया। मेरे पैरों पर सूजन आने लगी, मैं थोड़ा भी काम करने पर थक जाता था। और इस विषय में मैंने अपनी सारी वैद्यकीय जाँच बड़े-बड़े डॉक्टरों से करवायी। डॉक्टरों ने जाँच करने के बाद कहा कि यह तो (Esseatial Hypertension) कायम रक्तदाब है, और इसके लिए तुम्हें जिंदगी भर गोलियाँ खानी पड़ेंगी।

मैं जानता था कि मेरी सारी बीमारी की जड़ व्यसन हैं। और थोड़ा मेरा वजन भी ज़्यादा था, सो तो मैंने योगासन द्वारा और खान पान पर कंट्रोल कर लिया, और मैं कुछ हद तक व्यसन छोड़ने में कामयाब रहा। लेकिन एक व्यसन छोड़ता तो दूसरा व्यसन जड़ जाता। और दूसरा छोड़ता तो तीसरा लग जाता था। इस प्रकार मैं अपने व्यसन की तीव्रता तो कम कर सका लेकिन उनसे स्थायी छुटकारा पाने में नाकामयाब रहा।

मैं व्यसन छोड़ने में कामयाब न हो सका इसलिए मेरे दिमाग पर हमेशा खिचाव (Tension) रहने लगी। हमेशा मैं इसी फिक्र में रहता था, कि ये व्यसन कब छूटेगा। खास बात तो यह है कि मेरे हमेशा परेशान रहने के कारण मैंने जो कुछ व्यसन कम किया था वह भी और बढ़ने लगा। मेरे व्यसन न छोड़ सकने का कारण यहां बता रहा हूँ।

मनुष्य शरीर ऐसा है कि, जिसको एक बार किसी वस्तु की आदत हो जाने पर अगर अचानक वह वस्तु उसे मिलना बंद हो जाये तो शरीर उसके विपरीत अपनी प्रति-क्रिया व्यक्त करता है। जैसे मुझे सिग्रेट पीने का शोक था और अगर मैं सिग्रेट पीना एक-दम छोड़ देता था तो मेरा शरीर उसका प्रतिकार करता था। मानो मेरे हाथ-पांव कांपने लगते थे, कोई काम में दिल नहीं लगता था, हमेशा उसकी याद आती थी। इन सबको Withdrawal Symptoms) कहते हैं। इसी कारण मनुष्य किसी भी

व्यसन का एक बार आदि होने के बाद उसको छोड़ नहीं सकता।

मैं घर से दवाखाना जाता था उसी रास्ते में "प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय" आता है, मैं रोज आते जाते यह बोर्ड पढ़ता था और काफी समय से मेरी वहाँ जाने की इच्छा इस विद्यालय के विषय में जानने की थी, लेकिन मैं वहाँ जाने की हिम्मत न कर सका क्योंकि इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। और मेरा अपना ऐसा ख्याल था कि, शायद यह विद्यालय केवल कुमारियों के लिए ही है। लेकिन एक किसी व्यक्ति से पता चला कि यह विद्यालय सभी के लिए खुला है और यहां पर राजयोग सिखाते हैं जिसमें मन को शांति मिलती है। मैंने उसी दिन निश्चय किया कि, मैं वहां ज़रूर जाऊंगा, और दूसरे ही दिन मैं वहां गया। वहाँ जो बहन है उन्होंने मुझे बताया कि अगर आपको कुछ पाना है तो हमारा सात दिन का कोर्स है, उसके लिए कुछ परहेज आपको रखना पड़ेगा, उनमें से व्यसन छोड़ना यह भी एक परहेज है।

पहले तो मुझे शंका हुई कि क्या मैं अपने व्यसनों से परहेज कर सकूंगा ? मैंने बहनजी से हां तो कह दी थी और दूसरे दिन से मैंने ज्ञान सुनना आरंभ भी कर दिया था। मैं यह जानकर आश्चर्य चकित हुआ कि उस ज्ञान के सात दिन के कोर्स के समय मुझे अपने व्यसनों की याद भी नहीं आती थी और जो (Withdrawal Symptoms) थे वे भी न जाने कहाँ गायब हो गये। मैंने सोचा, हो न हो यह सब राजयोग की ही शक्ति है और मैंने निश्चय किया कि मैं अब राजयोग हमेशा प्रतिदिन करूंगा और प्रतिदिन बहनों के मुख से शिव बाबा का दिया ज्ञान भी सुनूंगा। ताकि मुझमें और जो कोई भी विकार हैं वे नष्ट हो जाएं और मैं रोज इस विद्यालय में जाता हूँ।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं अब शारीरिक और मानसिक दोनों ओर से स्वस्थ हूँ। मेरा (Blood pressure) भी अब कंट्रोल में है और मैंने सब दवाईयाँ भी बंद कर दी हैं।

लोग कहते हैं कि, व्यसन एक ऐसी बिमारी है कि जिसका कोई इलाज नहीं है यह एक बार लग जाए तो मनुष्य के साथ ही जाती है। लेकिन मेरे ख्याल से यह धारणा बिल्कुल गलत है, क्योंकि, इस बिमारी की भी एक दवा है जिसे हम "राजयोग" कहते हैं। जी हाँ "राजयोग" ही एक ऐसी दवा है जो मनुष्य के सभी विकारों और व्यसनों को नेस्तनाबूद करती है। □

विश्व बन्धुत्व

(पृष्ठ ९ का शेष)

वे अमेरिकी भाई वास्तव में स्वामी रामतीर्थ को अपने साथ शिकागो ले गये, एक वर्ष दस माह तक उन्हें अपने साथ रखा और सारे अमेरिका में उनके भाषणों का इन्तजाम किया।

तो भाइयो, यही विश्व बन्धुत्व का भाव ये ब्रह्माकुमारियाँ मानव समाज में गांव-गांव, गली-गली घूम कर, भर रही हैं कि अपने को आत्मा समझो। राष्ट्र भेद, भाषा भेद, धर्म भेद, कुल भेद, मत भेद, लिंग भेद से ऊपर उठकर अपने को आत्मा समझो। इसी से विश्व में विश्व-बन्धुत्व का भाव फैलेगा और सारे मानव समाज का कल्याण होगा।

इस भाव के समाप्त-प्रायः हो जाने से कि हम सभी आत्मायें भाई-भाई हैं और एक पिता परमात्मा की सन्तान हैं, राष्ट्र भेद; धर्म भेद, भाषा भेद, कुल भेद व मत भेद उभरकर सामने आ रहे हैं और विश्व की समस्याओं को बढ़ा रहे हैं। तो ऐसे कठिन समय में जब कि भयानक बमों की छांव में सम्पूर्ण मानवता डरी हुई खड़ी है, इस 'विश्व बन्धुत्व' के भाव की बहुत आवश्यकता है।

तो आइये संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित इस युवा वर्ष में हम सब संकल्प लें कि हम विश्व के समस्त मानव को भाई-भाई के रूप में देखते हुये व्यवहार करेंगे। □

"युवक रे !"

(ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली)

युवक रे ! नव वर्ष तेरा है, सिर्फ तेरे लिए।
तुझको जीवन देना है, नए सवेरे के लिए॥

नए में, नया काम कर,
ध्वंस नहीं तू निर्माण कर;
निर्माण कर, निर्माण बन,
क्रान्तिकारी नहीं, कान्तिवान बन;

जलाने हैं तुझे आत्माओं के दीए।
नव वर्ष तेरा है, सिर्फ तेरे लिए॥

दिया है समय ने अवसर स्वर्णिम तुझे,
गँवाना नहीं, देख ! समय न चके;

खड़ा युग स्वर्णिम स्वागत के लिए।
नव वर्ष तेरा है, सिर्फ तेरे लिए॥

गया नहीं केवल वर्ष ही चौरासी,
हुए जन्म भी पूरे लाया सन्देश पच्चासी;

पच्चासी में ज्ञान को पचाना है।
रावण राज्य को धरा से मिटाना है॥

गया बीत समय फिर हाथ नहीं आएगा,
फरिश्तों का कारवाँ शीघ्र चला जाएगा;

चुना तुझे उसने सन्देश देने लिए।
नव वर्ष तेरा है सिर्फ तेरे लिए॥

जोड़ चुका बहुत तू देहों से रिश्ते,
बुला रहे अब तुझे अव्यक्त अमर फरिश्ते;

कर सका अब तलक बात आत्माओं की।
सुनी उनकी सिर्फ सुनाई आपदाओं की॥

सुन अब पुकार परमातम्,
शुद्ध करे अन्तःकरण;

वक्त यह पावन बनाने बनने के लिए।
युवक रे ! नव वर्ष तेरा है सिर्फ तेरे लिए॥

युवा वर्ष के उपलक्ष में भिन्न-भिन्न स्थानों पर युवा- उत्थान समारोह तथा शोभा यात्रा

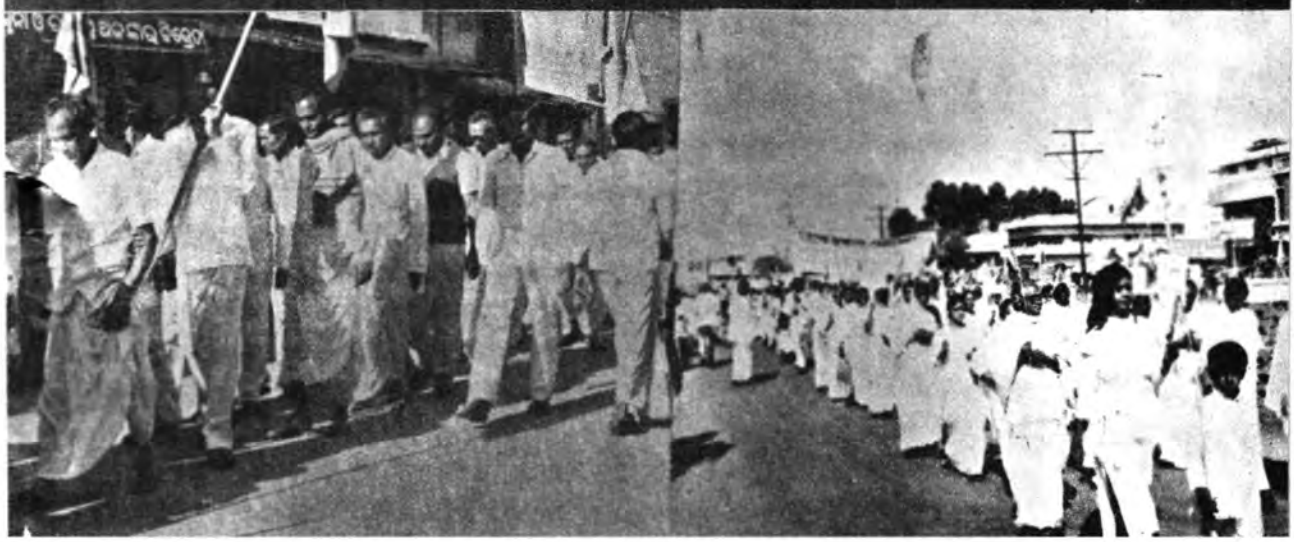

राजापार्क जयपुर केन्द्र द्वारा सोडाला में आयोजित शिव दर्शन प्रदर्शनी एवं झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् डी०आई०जी० पुलिस पी० एन० रैना अपने विचार लिख रहे हैं।

राजोरी गार्डन क्षेत्र के नवनिर्वाचित एम. पी., भ्राता ललित माकन सेवा केन्द्र पर पधारे। वे राजयोग भवन में अपने उद्गार प्रगट करते हुए।

सोलापुर के आध्यात्मिक समारोह में प्रवचन करते हुए। ब्र. कु. सोम प्रभा उनके दायें तरफ विश्व समाचार के जेष्ठ सम्पादक ब्र. कु. बाबूराव, भ्राता प्रकाश कृष्ण इत्यादि।

मुर्वाड सेवा केन्द्र मे ब्र.कु. रेखा, ब्र. कु. गीता शान्ता राम धोलय को लक्ष्मी नारायण का चित्र भेंट कर रही हैं।

जबलपुर में एक आध्यात्मिक समारोह में म० प्र० उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता एस० अवस्थी अपने विचार प्रगट करते हुए। मंच पर ब्र० कु० बहनों के साथ रानी दुर्गावती विश्व-विद्यालय जबलपुर के कुलपति भ्राता अमरेश्वर अवस्थी बैठे हैं।

कारवाड़-आध्यात्मिक समारोह में पुलिस अध्यक्ष अपने विचार सुना रहे हैं, **पास में जिलाधीश श्री निवास राज बैठे हैं।**

कहानी

एक मनुष्य को संवारने से संसार को संवारने की प्रक्रिया प्रारम्भ

ले०—ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो, आपने यह उक्ति कई बार सुनी होगी कि 'व्यक्ति को बदलने से ही समष्टि बदलती है।' अथवा एक को बदलने से १० बदल जाते हैं। इसके सम्बन्ध में एक कहानी मुझे याद हो आई है। वह इस बात को रमणीक रीति से स्पष्ट करती है। कहानी इस प्रकार है :

कहते हैं कि एक पिता ने अपने पुत्र की बुद्धि परीक्षा (IntelligenceTest) लेने के लिए एक युक्ति रची। उसने बाज़ार से ५० पैसे में विश्व का छपा हुआ एक नक्शा खरीदा। नक्शे के पीछे जो खाली पृष्ठ था, जिस पर कुछ भी छपा हुआ नहीं था, उस पर उसने अपने हाथ से जैसा-कैसा मनुष्य की आकृति का एक चित्र बना दिया। वह स्वयं कोई चित्रकार तो नहीं था परन्तु बच्चे की परीक्षा के लिए जो तरकीब उसने रची थी, उसमें इस चित्र का होना ज़रूरी था परन्तु एक चित्रकार के द्वारा बनाए गए चित्र की तरह उसका एकदम ठीक होना ज़रूरी नहीं था। इसलिए जैसे आप लोग या हम बैठे-बैठे हाथ में कोई पैंसिल आ जाने पर, अपने मन को छूट देकर कोई चित्र बना डालते हैं, ऐसे ही उसने पैन्सिल से एक चित्र बना डाला।

ये सब करके उसने उस चित्र के छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये। आप सोचते होंगे कि पैसे खर्च कर के और चित्र बनाकर उस व्यक्ति ने वह चित्र फाड़ क्यों डाला ? आपके मन में यह भी विचार आ सकता है कि शायद उस व्यक्ति का मस्तिष्क ठीक नहीं होगा—तभी तो बाजार में जाकर, पैसे खच कर, चित्र खरीदकर तथा और काम छोड़ कर मनुष्य का चित्र बनाकर फिर उसने उसे फाड़ने की क्रिया की ! परन्तु हम आपको पहले से बताना चाहते हैं कि आपका यह विचार ठीक नहीं है परन्तु सच तो यह है कि उसने जान बूझकर चित्र को फाड़ा। क्योंकि हम आपको पहले ही यह बता चुके हैं कि बच्चे की सूझ-बूझ, उसकी अन्वेषण शक्ति, उसकी कल्पना शक्ति (Imagination) आदि आदि को जाँचने के लिए ही उसने यह एक तरीका अपनाया था। हम आपको यह भी बता देना चाहते हैं कि यह व्यक्ति उस बच्चे का पिता ही था जो न तो अपने पैसे खराब करना चाहता था और न ही बच्चे को परेशान करना चाहता था बल्कि उसने तो इसे परीक्षा की प्रणाली के तौर से निर्धारित किया था।

अच्छा तो फिर क्या हुआ ? उसने ये फटे हुए टुकड़े अपने बच्चे के हाथ में सौंप दिये और उन टुकड़ों से भरा हुआ लिफाफा देते हुए उसने प्यार से कहा—"बेटा, यह पहले विश्व का एक नक्शा था, अब ये उसके छोटे-छोटे टुकड़े हैं, क्या तुम इन्हें आपस में मिलाकर और जोड़कर इन्हें फिर से विश्व के आकार में लाकर इन्हें संवारने का सहयोग तुम मुझे दे सकते हो ?"

बच्चा बोला—'पिताजी, मैं कोशिश तो पूरी करूँगा। है तो कठिन परन्तु आपके आशीर्वाद से हो ही जाएगा।"

दोनों चेहरे पर मुस्कुराहट लिए हुए विदा हुए और बच्चे ने जाकर अपने अध्ययन कक्ष में अपनी मेज़ पर सारा लिफाफा उंडेल दिया। उसने देखा कि टकड़े भी कुछ कम नहीं हैं और उनकी आकृति

भी भाँति-भाँति की है और उनमें कोई तरतीब, कोई सिलसिला कुछ भी तो नहीं। अब इन्हें इकट्ठा कैसे किया जाए, संवारा कैसे जाए ?

अचानक ही उसका ध्यान एक टुकड़े के पिछली ओर चला गया। उसने देखा कि उस पर पैन्सिल से होंठ बने हुए हैं। उसको आश्चर्य हुआ और उसने दूसरे टुकड़ों को भी उलटने की कोशिश की तो उसे मालूम हुआ कि किसी हिस्से पर नाक, किसी पर एक आँख और किसी अन्य हिस्से पर शरीर का कोई अन्य भाग या भाग का भी कुछ अंश बना हुआ है। उसके मन में एक तरकीब सूझ गई। उसने सोचा कि अगर इन टुकड़ों को जोड़-जोड़कर इस आकृति के अनुसार इन्सान बना दिया जाए तो बस, मुआमला सुधर जाएगा। वर्ना तो ये गोरख धन्धा कभी सिरे लगने वाला मालूम नहीं होता।

बच्चे के मन में ये शब्द उभर आये—"ठीक है, अब ऐसे ही करता हूँ।"

अपने मन में हल करने की विधि को ठीक समझकर उसने आँख, कान, नाक, सिर, हाथ, भुजा, टाँग, पेट, छाती, कन्धा, घुटना, टखना सब यथास्थान रखने शुरू किये और जैसे ईंट रखने से एक इमारत बन जाती है, कुछ ही देर में इन्सान का चित्र बन गया और उस इन्सान के बनने से विश्व बन गया। दूसरे शब्दों में, आदमी के संवरने से विश्व संवर गया।

इसी प्रकार, शिव बाबा कहते हैं कि अगर आप अपने सामने एक दो ताजधारी देवता अथवा देवी का चित्र मन में रख लें और अपने जीवन को उसमें ढालने की कोशिश करें अथवा उसके अनुरूप संवारने की कोशिश करें तो उससे संसार संवर जाएगा। उसका कारण यह है कि आपको संवरता देखकर दूसरों को भी संवरने की विधि आ जाएगी। और, वे भी उस अनुसार ही कार्य करने लगेंगे। इस प्रकार संवरने की प्रक्रिया फैल जाने से अनेकों का बदलना सम्भव हो जाएगा। इसलिए ही कहा गया है कि एक के बदलने से संसार बदल जाता है।

बच्चो, आप देखते हैं कि एक छोटा-सा बीज बोने से उससे एक ऐसा वृक्ष उत्पन्न हो आता है जिससे हर वर्ष और कई वर्षों तक लगातार फल ही नहीं निकलते बल्कि सैकड़ों गुना अधिक बीज भी उससे पैदा होते हैं।

इसी प्रकार एक व्यक्ति जो अपनी शिशु अवस्था में इतना असहाय होता है और चींटी से भी अपनी सुरक्षा करने में असमर्थ होता है, वह बड़ा होकर एक कुशल सेनाध्यक्ष बनकर सारे देश की जिम्मेवारी भी अपने ऊपर ले लेता है और अपनी सैनिक कुशलता से अनेकों को कुशल सैनिक बनने की प्रेरणा व शिक्षा देता है।

अन्यश्च, एक अप्रसिद्ध बच्चा बड़ा होकर ईश्वरीय लग्न के द्वारा एक महात्मा बनकर हजारों-लाखों के जीवन को प्रभावित करता है। अतः निस्सन्देह एक के बदलने से संसार बदल जाता है।

(पृष्ठ २० का शेष)

साथ तो हमारी प्रीति कई गुना और सदा स्थाई होनी चाहिए। और उस प्रीति को निभाने में हमें दिल व जान से उसकी सब आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। और उसके बताये मार्ग पर, उसकी श्रीमत पर हमें चलना चाहिए। अब लौकिक को लौकिक से परिवर्तित करके हमारे मन का उससे अटूट प्यार हो, उसके हम फरमानबरदार और वफादार हों और तन, मन, धन से उस द्वारा बताए हुए सेवा पथ पर हम जुट जाएँ और उसे ही हम अपना साथी बनाकर सब मर्यादाओं का पालन करें—यही उससे सच्ची प्रीत की रीति निभाना है।

दिल्ली शक्ति नगर सेवा केन्द्र की ओर से होली के उपलक्ष्य में शिव शक्तियों की झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् क्षेत्रीय काउन्सलर नरसिंह दास गुप्ता जी.

कल्याण क्षेत्र से लोक सभा के लिए भ्राता रामकापसे चुनकर आये, उनका सत्कार कल्याण सेवा केन्द्र पर आयोजित किया गया। ↓

राजयोग कार्यक्रम में भाग लेते हुए ब्र. कु. वसुराज भ्राता देशाई, वाईस चान्सलर करनाटक यूनिवर्सिटी धारवाड़ तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे हैं।

वोकारो सेवा केन्द्र की ओर मे राम मन्दिर मे चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सी० आई० एस०एफ० के कमान्डेन्ट भ्राता चेतराम जी।

ब्रजराज नगर में "युवा उत्थान समारोह" के अवसर पर मंच पर ब्रजराज नगर कोलमाइन्स के जनरल मैनेजर भ्राता डी० आर० मेमीदवार जी, ब्र. कु. वहनें व अन्य प्रमुख व्यक्ति।

बेलगाम में आध्यात्मिक कार्यक्रम में प्रवचन करते हुए ब्र. कु. ऊषा जी, मंच पर मेडिकल कालेज के प्रिन्सिपल डा० राजेश्वर जी व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बैठे

तिनसुखिया की तरफ से मोरान में प्रदर्शनी लगाई गयी, जिसका उद्घाटन मंगीराम अग्रवाल ने किया उन्हें ब्र. कु. सत्यवती ईश्वरीय साहित्य भेंट करती हुई।

दिल्ली कृष्ण नगर सेवा केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक कार्यक्रम पर भ्राता [illegible] कौंसिलर, अपने विचार प्रकट करते हुए। साथ में ब्र. कु. लक्षमन व ब्र. कु. [illegible] खड़ी हैं।

कोरबा उप-सेवा केन्द्र की ओर से शिव मन्दिर में शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, टेप काट कर प्रदर्शनी का उद्घाटन हो रहा है।

वर्धा सेवा केन्द्र की ओर से चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उद्घाटक भ्राता [illegible] वाणी जी अपने विचार सुना रहे हैं।

भरतपुर सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता सी० वी० अर्जुन राव (अलवर भरतपुर आंचलिक ग्रामीण बैंक के) अध्यक्ष करते हुए। पास में ब्र. कु कविता व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

नेपाल-नारायणगढ़ चितौन जिला [illegible] भ्राता राम जी प्रसाद त्रिपाठी को ब्र. कु. [illegible] साहित्य तथा मधुबन का प्रसाद दे रही है।

मेदनापुर कन्टई में भ्राता त्रिलोकेश सिन्हा चेयरमैन जी को शिव बाबा का सन्देश दिया गया। चित्र में उनका परिवार व ब्र. कु. मन्नी व सपना खडी हैं।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री नलिनी जयन्त शिव दर्शन प्रदर्शनी देखने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य का अवलोकन करते हुए। साथ में ब्र. कु. नलिनी ब्र. कु. इन्द्रा ब्र. कु. कुन्ती तथा अन्य।

जावली गाँव में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक समारोह के पश्चात् ब्र. कु. कमलमणि गाँव की वहनों को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

मुज़फ्फ़र नगर-आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर ब्र. कु. कलावती, ब्र. कु. उर्मिला व अन्य वहन भाई दिखाई दे रहे हैं।

विसनगर में आयोजित कार्यक्रम में महाराज श्री गुलाबनाथ जी प्रवचन कर रहे हैं, साथ में ब्र. कु. तृप्ति वहन और ब्र. कु. रक्षा वहन बैठे हुए हैं।

अमरावती में आध्यात्मिक कार्यक्रम में डा० शर्मा जी, प्राचार्य मेडिकल कालेज में प्रवचन करते हुए।

सम्बलपुर – बरेगनर में आध्यात्मिक समारोह में भ्राता सरोज कुमार प्रधान भूमि उप-निर्देशक अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। साथ में ब्र. कु. भाग. ब्र. क. पार्वती बैठी हैं।

प्रीत की रीति

ले०—ब्र० कु० सुधा, शक्तिनगर, दिल्ली

यदि गहराई से देखा जाए तो योग का मार्ग वास्तव में प्रभु-प्रीति ही का मार्ग है। समस्त ईश्वरीय ज्ञान भी हमें एक प्रभु ही का हो जाने के लिए परमपिता परमात्मा का परिचय देता है और उस ही से प्रीति जोड़ने की विधि-विधान बताता है। अतः आध्यात्मिक पुरुषार्थ 'प्रभु-प्रीति' ही का दूसरा नाम है। मनमनाभव की आज्ञा का पालन भी मन की प्रीति का नाता एक परमात्मा ही के साथ जोड़ने से हो सकता है। परन्तु प्रश्न यह है कि उस प्रीत की रीति को कैसे निभाया जाए ?

हमें यह याद रखना चाहिए कि केवल कुछ समय बैठकर मन को परमात्मा पर एकाग्र करना ही प्रीत की रीति निभाना नहीं बल्कि जिससे प्रीत होती है, एक तो उसकी याद बनी ही रहती है और दूसरी बात यह कि प्रेमी अपने प्रियतम के लिए सब-कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार होता है। वह उसके लिए चाँद तक ला देने का उद्यम करने को भी तैयार हो जाता है और प्रियतम के मन जो भाए, वह वैसा ही करने की कोशिश करता है।

हम जब ब्रह्मा बाबा के ज्ञान-प्रवेश से पहले के जीवन पर विचार करते हैं तो हमें ऐसी बहुत-सी झलकियाँ मिलती हैं। जो इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि प्रीत की रीति को कैसे निभाया जाए। भक्तिमार्ग में होने के बावजूद भी अर्थात अभी ज्ञान का उदय न हुआ होने पर भी बाबा प्रीत की रीति निभाना खूब जानते थे। शायद यह भी एक कारण है कि शिव बाबा, जो स्वय प्रेम के सागर हैं, ने भी ब्रह्मा बाबा को अपना साकार माध्यम बनाया।

अभी बाल्यावस्था में ही लखीराज कहलाने वाले बालक के लौकिक पिता दूर एक गाँव में अस्वस्थ हुए तो उस बालक ने प्यार से लबालब होकर अपने लौकिक पिता को यातायात के उस समय उपलब्ध साधनों द्वारा निकट के एक शहर में ले जाकर डाक्टर को दिखाने का पूर्ण पुरुषार्थ किया। यद्यपि उनकी आयु बहुत छोटी थी तो भी पिता से प्रीत निभाने की रीति को अपनाते हुए उस बालक ने यह साहस किया, यह जिम्मेवारी संभाली और बाकी सब काम एक ओर छोड़कर इस काम को किया। इसी प्रकार उनकी अद्भुत जीवन-कहानी से हमें मालूम होता है कि एक बार जब वे अपने पोते के नामकरण संस्कार मनाने के लिए मित्रों व सम्बन्धियों को निमन्त्रण भेज चुके थे और सब तैयारियाँ भी कर चुके थे और उसके मनाने का दिन भी आ पहुँचा था तब वे अपने तत्कालीन भक्ति मार्गीय गुरु से तार प्राप्त होने पर सब-कुछ वहीं छोड़ प्राप्त आज्ञा के अनुसार गुरु से मिलने चले गए। इसी प्रकार का एक दूसरा वृत्तान्त भी, जो कि उनके लौकिक गुरु से सम्बन्धित है, हमें विदित है। वह यह कि जब कभी उनके भक्ति मार्गीय गुरु उनके यहाँ आकर ठहरते तो वे उनकी सुख-सुविधा और सेवा में कोई कसर न छोड़ते। यहाँ तक कि वे उनके शौच स्थान को सुगन्धित बनाए रखने के लिए वहाँ गुलाब जल छिड़कवाया करते और उनकी निद्रा के समय आसपास के किसी कुत्ते की आवाज उनके आराम में विघ्न न डाले, उसके लिए वे चौकीदार को तैनात करते थे !

कहने का भाव यह है कि बच्चे का पिता से जो प्यार होता है तो वह पिता की सेवा-सुश्रुषा करने में ही अपनी प्रसन्नता व सफलता का अनुभव करता है और जब किसी की अपने गुरु से प्रीत होती है वह उसकी आज्ञा पालन करने में न आनाकानी करता है, न कोई कोर-कसर छोड़ता है। दोस्तों की प्रीति, पति-पत्नि की प्रीति के बारे में तो संसार में कई किस्से और वृत्तान्त प्रसिद्ध हैं।

इस सबसे यह स्पष्ट है कि परमात्मा जिसके साथ हमारे ये सब आत्मिक सम्बन्ध हैं, उसके

(शेष पृष्ठ १६ पर)

समस्याओं के घेरे में....

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

समस्याओं के घेरे में फँसा प्राणी चारों ओर प्यासी निगाहों से निहारता है। कोई उसे मदद करे, कोई उसके दिल का हाल पूछे, कोई उसे सान्त्वना दिलाये—ये प्यास उसके जीवन का अंग बन जाती है। परन्तु अगर मनुष्य स्वयं सर्वशक्तिवान का सहयोग प्राप्त करना जान जाए तो "समस्याओं से संघर्ष" उसकी बल वृद्धि का कारण बन सकता है।

कहना तो सरल है, परन्तु जब एक के बाद एक समस्या जीवन को निराश करने लगती है तो राणा प्रताप जैसे महाबली भी साहस खो बैठते हैं, परन्तु उन्हीं क्षणों में अगर पुनः कोई उनका आत्म-विश्वास जागृत कर दे तो वे ही विजय की पताका पुनः लहरा सकते हैं। ये माया से युद्ध है—साधारण खेल नहीं। इस युद्ध में निराशाएँ मनुष्य को रिरुत्साहित करती हैं, मन हार मानकर बैठ जाता है'''उस समय मन की छुपी शक्तियों को जागृत करने की आवश्यकता है।

समस्याएँ क्यों आती हैं ?

ज्ञान-युक्त आत्माएँ इस तथ्य से पूर्णतयः परिचित हैं कि वर्तमान समय हमारे ६३ जन्मों के कर्मों को स्वच्छ करने का समय है। और हमारे सम्बन्ध उन्हीं आत्माओं से बनते हैं जो हमारे सम्बन्ध में ८४ जन्म रहे हैं। जो कुछ हमने किया है उसका फल हमें यहाँ पूर्ण करना होगा ही। इसलिए कई आत्माएँ हमारे ही विकृत सम्बन्धों के कारण हमारे मार्ग में बाधा बनकर खड़ी हो जाती हैं। इसलिए बड़ी ही धैर्यता से हमें अपने कर्मों के खाते को समाप्त करना चाहिए।

परन्तु फिर भी यह देखा जाता है कि बहुत सी समस्याओं या विघ्नों का कारण "मैं-पन" है। 'मैं' आते ही मन भारी हो जाता है, मन उलझने लगता है। उस पर अनुमान की पॉलिश हो जाने से मनुष्य एक छोटी सी बात को पहाड़ जैसा विघ्न रूप दे देता है और फिर उसे लांघने का प्रयास करता है। और सोच-सोचकर मनुष्य अपनी समस्याओं को बहुत ही जटिल बना देता है।

तो अगर हम विघ्न मुक्त रहना चाहते हैं तो हम किसी भी बात का विस्तार न करें। **विस्तार ही विकराल बनाता है।** विस्तार ही परेशानी का मूल कारण है। हम विघ्न आने पर चेक करें कि यहाँ "मैं-पन" कहाँ छुपा है। मैं-पन का बहुत विस्तार है। "मेरा मान हो, मुझे मान क्यों नहीं दिया", 'यह कार्य मेरे बिना पूछे क्यों किया', 'मेरी बात क्यों नहीं मानी गई'—ये विभिन्न "मैं" ही मन को उदास करते हैं। हम किसी भी बात को फौरन ही समाप्त करने की कला सीखें।

विघ्न आने पर

बहुत ही धैर्यता से काम लेना चाहिए। विघ्नों की बौछार होने पर शिवबाबा की छत्रछाया में छुप जाना अति श्रेष्ठ है। पुरुषार्थी को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हर समस्या का समाधान हम अपनी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा ही कर सकते हैं। परन्तु कई महावीर स्वस्थिति को खोकर खाली हाथ विघ्नों से लड़ना चाहते हैं। इसलिए यह तो सत्य है कि विघ्न स्वस्थिति को बिगाड़ देते हैं, परन्तु विघ्नों को शिवबाबा के हवाले करके पहले स्वस्थिति को मजबूत बनाना ही श्रेयकर है।

याद रक्खो

'समस्या' नाम सुनकर पुरुषार्थी उत्साह खो बैठते हैं। परन्तु याद रखना होगा कि एक किनारे से दूसरे किनारे पर जाने के लिए मझधार से गुजरना तो होगा ही। कुछ पाने के लिए कुछ खोना ही पड़ेगा।

भय का कारण—क्या होगा ?

समस्या आने पर मनुष्य घबरा जाता है कि पता नहीं "क्या होगा"—भविष्य की चिन्ता उसे भयभीत करती है। तब वह अल्लाह का नर यह भूल जाता है कि भगवान के चेतन सितारों को बादल समाप्त नहीं कर पायेंगे। बादल हटेंगे और सितारे फिर विश्व में उसी तरह चमकेंगे। बादल चलायमान हैं। वे आज हैं कल नहीं होंगे—सितारों को अपने मार्ग में बादल देखकर घबराना नहीं चाहिए। हमारा साथी सर्वशक्तिवान है, हमें भविष्य के बारे में भी निश्चिन्त रहना चाहिए।

चैक करो

उठते ही चेक करो कि हमारा मन किस प्रभाव में चलने लगा है। पूर्व दिन की घटनाओं के प्रभाव में, किसी स्वप्न के प्रभाव में या कुछ दृश्य के प्रभाव में और उसे मोड़ दो। मन में ईश्वरीय ज्ञान का ही प्रभाव हो। तो मन भरपूर होने से समस्याओं को स्वतः ही समाप्त कर देगा। जब समस्याएँ आती हैं तो मन में बार-बार के अभ्यास से इतनी दृढ़ता ले आना चाहिए कि मन समस्या के प्रभाव में ही न चले।

निवारण

हम हर कार्य में संकल्प शक्ति का उपयोग करना सीखें। संकल्प शक्ति को बढ़ाने के लिए संकल्पों के प्रवाह को रोकना आवश्यक है। अर्थात् हम अपनी दिनचर्या में "एकाग्रता" के लिए समय निश्चित अवश्य ही करें। तब फिर हमारे मन की शक्ति ही हमारी समस्याओं का निवारक बन जाएगी। साथ ही साथ हमें संकल्प शक्ति का ज्ञान भी हो और अनुभव भी। ईश्वरीय रूहाब (नशा) भी अनेक समस्याओं का समाधान है। मुख्य बात यही है कि ईश्वरीय नशा रहने से मन की शक्ति संग्रहित रहती है और वही शक्ति विघ्नों को दूर से ही भस्म कर देती है।

और बहुत से विघ्नों का निदान हम अपनी शुभ-भावनाओं से करें। शुभ-भावना हमारा प्रमुख हथियार है—सुख से जीने का आधार है। हमारी शुभ भावनाएँ, दूसरों को उनकी गलती महसूस करने के लिए बाध्य करती हैं, दूसरों के मन में स्नेह व सहयोग की भावना जागृत करती हैं। अतः इस सुख प्राप्ति के संगमयुग पर किसी ने शुभ-भावनाएँ रखना सीखा तो समझना चाहिए कि उसने सब कुछ सीखा है और इसी कारण वह स्वयं को बहुत जगह पर सुरक्षित अनुभव करेगा।

समस्याओं के दृष्टिकोण

छोटी बात को बड़ा समझना साधारण आत्मा की निशानी है और बड़ी बात को छोटे रूप में देखना महान आत्मा का लक्षण है। तो हम अपने दृष्टिकोण को बदलें। जल्दी ही अपने संकल्पों को उलझा न दें। हम समस्याओं के प्रति "हल्का" दृष्टिकोण अपनाएं। बात को छोटा समझने से हमारी शक्तियों का पतन नहीं होगा। बहुत बड़ी बात समझने से, पहले ही हम शक्तिहीन हो जाएंगे तब समस्या का सामना क्या करेंगे ! स्वयं हल्के हो जाओ, तो परिस्थितियाँ भी हल्की हो जाएंगी।

वास्तव में ये ईश्वरीय मिलन का समय जन्म-जन्म के सुख, शान्ति, सन्तोष, धैर्यता, निर्भयता आदि विशेषताएँ भरने का समय है। इतना ही नहीं, पूरे कल्प में सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय अनुभूतियों का समय है। इस अद्भुत काल को अगर हम समस्याओं के घेरे में उलझे रहकर युद्ध करते-करते ही बिता देंगे तो निश्चय ही हम कुछ भी नहीं कर पायेंगे और हमारा पूरा कल्प खाली ही जाएगा। अतः ऐसे महान काल में स्वयं को स्वयं ही सुरक्षित करना चाहिए। मनुष्य चाहे समस्याओं को बढ़ा दे और चाहे तो क्षण में सबसे छुटकारा पा ले। यह किसी भी मनुष्य के अपने वश में है। अतः समय के महत्व को जानते हुए व स्वयं की शक्तियों को कार्य में लगाकर ईश्वरीय सुखों से सम्पन्न जीवन का आनन्द प्राप्त करे। □

सम्पूर्णता की चाह

ब्र० कु० उर्मिला, कुरुक्षेत्र

मानव की सबसे पहली इच्छा पूर्णता की है वह हरेक चीज को सम्पूर्णता से युक्त देखना चाहता है। अधूरेपन से उसे नफरत है, वितृष्णा है। उसकी यह सम्पूर्णता की चाह विशेष रूप से दो चीजों के लिए प्रकट होती है। पहली, उसके सम्बन्ध सम्पर्क अथवा जीवन में जो भी चीजें हैं, चाहे जड़ हों या चेतन, पूर्ण हों अर्थात् अविनाशी, शाश्वत और निरन्तर हों। जीवन में नया भले ही कुछ जुड़ जाए पर जितना पहले से मौजूद है उसका जरा-सा हिस्सा भी ना टूटे। वह चाहता है उसके सम्बन्धी उसे कभी ना छोड़ें, यह शरीर भी उससे कभी अलग ना हो अर्थात् उसके जीवन का कभी अन्त न हो। यहाँ तक कि जब वह किसी दुकान पर कोई चीज लेने जाता है तो भी सबसे पहले यही पूछता है, "कितने दिन चलेगी।" छोटी से छोटी महत्वहीन वस्तु का नष्ट हो जाना भी उसे स्वीकार्य नहीं है। दूसरे वह चाहता है कि उसके सम्पर्क में आने वाला हर मानव, हर गुण से परिपूर्ण हो। किसी में भी कोई कमजोरी, या अवगुण ना हो। यही कारण है कि स्वयं गुणहीन होते हुए भी वह दूसरे की छोटी सी गलती के प्रति भी असहनशील हो जाता है। छोटी-सी चीज की नश्वरता भी उसे दुःखी कर देती है। हालांकि वह इस तथ्य को जानता है कि इस संसार में न तो कोई मानव पूर्ण है और न ही कोई वस्तु जड़ या चेतन शाश्वत है। क्योंकि कहा ही गया है यह संसार नश्वर है, यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। इतना ज्ञान होने पर भी मानव क्यों ऐसी कामनाएँ करता है और उनके पूर्ण न होने पर क्यों दुःखी होता है ? उसके अन्दर कौन-सी ऐसी शक्ति है जो इन अनहोनी वस्तुओं को साकार देखना चाहती है ?

यह तो हम जानते ही हैं कि मानव में सोचने समझने और इच्छा करने वाली शक्ति आत्मा है। क्योंकि आत्मा रहित शरीर जड़ है। लेकिन विडम्बना यह है कि आत्मा अपने स्वरूप गुण और धर्म को भूले हुए है। स्वयं अनश्वर होने के नाते इसमें कामनाएँ भी अपने स्वरूप के अनुसार शाश्वत के लिए हैं, पर शरीर को अपना स्वरूप मानने के कारण इसकी नश्वरता से डरती है। मानव मन के अन्दर इसी बात का लगातार संघर्ष चलता है। एक तरफ सब कुछ पाने की लालसा दूसरी तरफ कुछ कर सकने की असमर्थता। चाहना एक प्राप्ति दूसरी। आत्मा ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करती है, ऊँचा ही ऊँचा जाना चाहती है, शरीर भान उसे सीमाओं में बाँध देता है। आत्मा सुख, शान्ति, पवित्रता की चाहना करती है, शरीर भान उसे विकारों में धकेल देता है। यही कारण है कि आज सभी के मुख से एक ही आवाज सुनाई देती है, "हम चाहते तो ऐसा हैं पर हो वसा जाता है।" क्योंकि चाहना आत्मा की है और प्रयत्न देहाभिमान के हैं। इसलिए 'ऐसा' और 'वैसा' में आकाश पाताल का अन्तर हो जाता है। क्योंकि शरीर और आत्मा में भी तो आकाश पाताल का अन्तर है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, जबकि शरीर क्षण-क्षण जर्जर होने वाला नश्वर तत्वों का बना पुतला है। आत्मा सदा एक समान, शरीर निरन्तर परिवर्तनशील, आत्मा सर्वशक्तिवान निराकार परमात्मा की सन्तान, शरीर प्रकृति द्वारा निर्मित, आत्मा चेतन शरीर जड़, आत्मा आदेशक और शरीर आदेशों को क्रियान्वित करने का साधन मात्र है। अब प्रश्न उठता है कि आत्मा में सम्पूर्णता की यह चाह कहाँ से आई ? अनुभव कहता है कि किसी भी चीज को देखे, सुने बिना हम उसकी कामना नहीं करते। अवश्य ही आत्मा ने कभी कोई ऐसी दुनिया देखी है जिसमें मानव गुणों से पूर्ण हो, साथ-साथ अजर अमर भी हो। यह दोनों ही बात हमारे पूर्वज देवी देवताओं श्री

लक्ष्मी और श्री नारायण और उनकी दुनिया पर पूरी उतरती हैं। सृष्टि के आदि में जब आत्मा पहले-पहल इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आती है तो वह सतोप्रधान, स्वर्णमयी, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म, देवी देवता के रूप में पार्ट बजाती है, यहाँ आत्मा स्वरूपस्थ होती है। यहाँ भी शरीर छूटता है पर आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होने के कारण इसे वस्त्र बदलने के समान एक साधारण घटना मानती है। क्योंकि यहाँ उसे अपने और शरीर के अलग-अलग अस्तित्व तथा अलग-अलग गुणों की पहचान है। कालान्तर में शरीर के साथ पार्ट बजाते-बजाते वह इसके भान में लिप्त हो जाती है और अपने को शरीर मानने लगती है। उसमें आदि और अनादि स्वरूप की भावनाएँ, विचार पैदा होते हैं पर शरीर भान में आने से वह अपने शक्ति स्वरूप को भूलकर अपने को कमजोर समझने लगती है। और इस प्रकार अपने रूप, गुण, धर्म के अनुसार इच्छा पूरी न होने कारण छटपटाती रहती है। अब सर्व-आत्माओं के पिता, विश्व का कल्याण करने वाले निराकार त्रिमूर्ति शिव, आत्मा की इसी छटपटाहट को दूर करने के लिए उसे स्वरूप का ज्ञान दे रहे हैं, ताकि वह पुनः स्वरूपस्थ होकर सुख शान्ति और सम्पूर्णता से युक्त हो जाए।

अति शक्तिशाली वस्तु कौन-सी ?

ब्र० कु० कस्तूरी, शोलापुर

कहानियों में से एक सुन्दर-सी कहानी बताई जाती है। एक बार देवदूत ने देवेन्द्र से पूछा, "देवेन्द्र जी, पत्थर से भी कोई शक्तिशाली वस्तु है ?" देवेन्द्र ने कहा, "हाँ, है। पत्थर से भी शक्तिशाली वस्तु लोहा है। क्योंकि लोहा बड़े-बड़े पत्थरों को भी तोड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है।"

लोहे से भी शक्तिशाली चीज और कौन-सी है ? देवदूत ने पछा, देवेन्द्र का उत्तर—"अग्नि है। क्योंकि अग्नि लोहे को पिघला देती है और उसको मोल्ड कर देती है।"

देवदूत का प्रश्न—'अग्नि' से भी शक्तिशाली चीज कौन-सी है ?

देवेन्द्र ने उत्तर दिया—'जल' क्योंकि अग्नि का जो प्रभाव है उसको पानी शमन (दमन) कर देता है।

देवदूत—'जल' से भी शक्तिशाली चोज कौन-सी है ?

देवेन्द्र ने कहा—'तूफान !' तूफान पानी को इधर-उधर झूलाता है। फिर तो तूफान से भी शक्तिशाली वस्तु कौन-सी है ? देवदूत ने पूछा—देवेन्द्र ने कहा, "हाँ, है !" सहानुभूति ही सबसे शक्तिशाली चीज है। करुणाशील हृदय से और कोई शक्तिशाली चीज नहीं है।

दया, करुणा, सहानुभूति यही नई दुनिया का आधार स्तम्भ हैं। दैवी सृष्टि की चाबी हैं।

आत्मचिंतन ही क्यों ?

ले०—ब्रह्माकुमारी रानी बहन, मुजफ्फरपुर (बिहार)

आज हर मनुष्य सुख-शांति और कल्याण को चाहना रखता है और इसकी प्राप्ति की होड़ में बेतहाशा दौड़ भी रहा है। सुन्दर से सुन्दर वस्त्र, स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन तथा ऐशोआराम की पर्याप्त सामग्रियाँ उपलब्ध होने के बावजूद भी मनुष्य भीतर ही भीतर घुटन-सी महसूस कर रहा है। आखिर कहाँ है इस घुटन की दवा ?

सुख और कल्याण की इसी कामना की पूर्ति हेतु आज प्रतिदिन लूट-मार, हत्या, बलात्कार आदि घटनाएँ कहीं न कहीं जरूर ही घटित होती हैं। जमीन-जायदाद का झगड़ा हो या जाति-बिरादरी का झगड़ा हो, धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर झगड़ा या राष्ट्र के नाम पर झगड़ा, सभी का कारण है सुख-शांति की तलाश। कामना की इस आग में आज लाखों लोगों की जानें जा रही हैं। दूर कहाँ जाएं, पारिवारिक कलह को ही देखें तो कौन व्यक्ति ऐसा है जो वंचित है ? आखिर मनुष्य कहाँ तक किससे लड़ता रहेगा और क्या इस लड़ाई से समस्याओं का निदान संभव है ? शायद नहीं। तो फिर उसके आस-पास जो इतनी घटनाएँ नित-प्रति घटती रहती हैं उसमें वह क्या करे ? क्या मूक बना देखता रहे ? किसी से कुछ भी न कहे ? क्या चुप रहकर व्यर्थ बातें सोच-सोचकर वह पागल नहीं हो जायेगा ? अगल-बगल घटने वाली घटनाओं का दृश्य तो मानस-पटल पर उभरेगा ही। आखिर वह इन समस्याओं से अपना बचाव कैसे करे ?

गहराई में जाने से लगता है कि आखिर किससे क्या कहा जाय ? किसको समझाया जाय ? दूसरे को समझाना कोई आसान बात नहीं है। और कौन मानता है आज के युग में किसी की बात ? पिता-पुत्र तो दूर, पत्नि भी पति की बात मानने को कतई तैयार नहीं है।

वास्तव में दूसरों को सुधारना किसी के वश की बात नहीं है। दूसरों का दोष तो तुरंत दिखाई पड़ जाता है; लेकिन अपना दोष मालूम ही नहीं पड़ता। सभा एक-दूसरे को गाइड करना तो जानते हैं लेकिन गाइड बनना नहीं जानते। आज पृथ्वी के किसी भी भू-भाग में चले जाएं सब तरफ दोष किसी-न-किसी रूप में अवश्य ही दिखाई पड़ेगा। दोषमुक्त कुछ भी नहीं है इस संसार में। फिर कहाँ तक माथापच्ची करते रहेंगे। ऐसी परिस्थिति में उचित यही है कि हम अपना दृष्टिकोण ही बदल लें और सुधार का यह रुख अपने तरफ कर लें। अपना सुधार बेशक संभव है। हममें भी बहुत सारे अवगुण हैं जो खटकते भी रहते हैं, लेकिन हम उनसे मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। वास्तव में यदि हम अपना ही दोष निकालने में सफल हो जाते हैं तो मानो सर्व समस्याओं का निदान कर लेते हैं। लेकिन अपना यह दोष निकले कैसे ? आत्म-निरीक्षण द्वारा। और आत्म-निरीक्षण के लिए ही आत्म-चिंतन की आवश्यकता है। आत्म-चिंतन के बिना आत्म-निरीक्षण नहीं हो सकता और आत्म-निरीक्षण के बिना आत्म शुद्धि संभव नहीं है।

अब आत्म-चिंतन कैसे करें ?

मैं आत्मा हूँ। अति सूक्ष्म हूँ। अजर, अमर, अविनाशी हूँ—मात्र इतना ही कहने से काम नहीं चलने वाला है। आत्म-चिंतन अर्थात् आत्म-निरीक्षण। और आत्म-निरीक्षण के लिए सबसे पहली आवश्यकता है एकान्त वास की। अपनी दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर एकान्त जीवन

का अनुभव करना चाहिए, जिसमें बड़ी बारीकी के साथ अपने अवगुणों को चेक करना चाहिए। दूसरों का दोष जितना आसानी से हम देख लेते हैं, अपना देख पाना उतना आसान नहीं है। अगर अपनी कमियों और कमजोरियों की लिस्ट निकालने बैठ तो देखें कितने मेहनत के बाद आकर कुछ हाथ लगेगा। अगर अपना अवगुण दिखाई पड़ने लगे तो समझिये आधी सफलता प्राप्त हो गई। अब अपने गुणों को खोजिए। सृष्टि पर कोई भी पार्टधारी ऐसा नहीं है जिसमें कोई न कोई विशेष गुण न हो। सभी पार्टधारी इस बेहद के रंगमंच पर कोई न कोई विशेष पार्ट लेकर ही अवतरित हुए हैं। विभिन्न प्रकार के अभिनय का होना ही इस विशाल रंगमंच की शोभा है। अत: परमात्मा ने हर आत्मा को कोई न कोई विशेष गुण देकर ही इस नाटकशाला में अभिनय करने को भेजा है। आत्म-चिंतन की डुबकी लगाकर हम अपना वह विशेष गुण आसानी से ढूंढ़ सकते हैं जिसके द्वारा परमात्मा हमसे विशेष कार्य कराना चाहता है। आत्म-चिंतन का मूल उद्देश्य ही है अपने गुणों और अवगुणों को ढूंढ़ निकालना। अगर आप दोनों ही चीजें ढूंढ़ लेते हैं तो समझिये तीन हिस्सा सफलता प्राप्त कर ली। अब चिंता मत कीजिए अवगुणों को भगाने की। बस, थोड़ी धैर्यता, थोड़ा साहस से सारा कार्य ठीक हो जायेगा।

दोष मुक्त कैसे होवें ?

कहते हैं एक डाल काटने से दूसरा स्वत: बढ़ने लगता है। अगर हम भी अपने एक-एक अवगुण को घटाते जायें तो दूसरे-दूसरे गुण स्वत: ही बढ़ने लगेंगे। लेकिन ध्यान देने योग्य बात यह है कि अपने गुणों को बार-बार अवश्य निहारिये ताकि उसे आप और अधिक संभाल सकें। अगर अवगुणों को निकालने में मेहनत लगती है तो मूँझिये मत, बुद्धि से काम लीजिए। बुद्धिवान मेहनत नहीं करते। जसे मान लीजिए किसी बाल्टी में रंग का घोल बचा हुआ है, तो उसको दो तरीके से आप धुलाई कर सकते हैं। या तो हाथ से साफ कीजिए या बाल्टी को नल के नीचे रखकर नल खोल दीजिए। आप देखेंगे कि जैसे-जसे बाल्टी में पानी भरता जायेगा रंग का घोल बाहर निकलता जायेगा और एक अवस्था ऐसी आयेगी। जब पूरी बाल्टी में केवल स्वच्छ पानी ही बचा रह जायेगा। ठीक इसी प्रकार पहले एक गुण को ही लें और उसको बढ़ाना शुरू कर दें। जैसे-जसे यह गुण बढ़ता जायेगा उसी अनुपात में उसका विरोधी अवगुण मिटता चला जायेगा। फिर दूसरा गुण, फिर तीसरा गुण, फिर चौथा गुण आदि। इस प्रकार आप अपने भीतर जैसे-जैसे दैवी गुणों को भरते जायेंगे, आसुरी गुण स्वत: नष्ट होते चले जायेंगे और तब एक समय ऐसा भी आ जायेगा जब आप में गुण ही गुण चमकने लगेंगे।

प्रत्येक गुण के साथ उसका प्रतिरोधक अवगुण अवश्य रहता है और अवगुण का विरोध करने के लिए गुण भी विद्यमान रहता है। मान लें आपमें प्रेम का संस्कार है तो ईर्ष्या भी जरूर होगी, सेवा का संस्कार है तो अहंकार भी अवश्य होगा। अवगुण को देख आपको बिलकुल निराश होने की आवश्यकता नहीं है। आप केवल अपने गुणों की तरफ ध्यान दें। बस ! संभव है कोई-कोई संस्कार कभी-कभी चंचलता दिखाये। उस समय आप उसके विरोधी गुणों से उसको शांत कर सकते हैं।

दूसरों को राय देने में हम जितने होशियार हैं उतना ही होशियार अगर उस राय को स्वयं मानने में हो जाएं तो काम बन जाता है। कहते हैं घर की आग पानी से बुझाई जा सकती है लेकिन जब पानी में ही आग लग जाय तब क्या करेंगे आप ? आज यही स्थिति हम सबकी है। जिस मन और बुद्धि से दसरों को राय देते हैं, वह स्वयं पाँच विकारों की अग्नि से घिरा हुआ है। अब पहले क्या हो ? आवश्यकता है पहले स्वयं बचें। इसके लिए ही आत्म-चिंतन की आवश्यकता है।

अशांति मन की होती है। और मन की इस अशांति को मिटाने का यह मतलब नहीं कि मन में

कोई संकल्प ही न चले, कोई विचार ही न उठे। संकल्प तो सदैव चलते ही रहेंगे। उसका दमन कभी नहीं किया जा सकता है। संकल्पों का उठना तभी बंद हो सकता है जब आत्मा शरीर से न्यारी हो जाय। अतएव शरीर में रहते संकल्पों को रोकने की इच्छा करना उचित नहीं। हाँ, आप स्वचिंतन द्वारा संकल्पों का दिशा-परिवर्तन अवश्य कर सकते हैं। व्यर्थ चिंतन तो स्वत: चलता ही रहता है। समर्थ चिंतन चले इसी के लिए आत्म-चिंतन की आवश्यकता है। कुछ दिनों के अभ्यास के बाद जब चिंतन की टेव पड़ जाती है और चिंतन प्रतिभा सामान्य रूप धारण कर लेती है। आत्म-चिंतन ही असल में मेडिटेशन है जो मैडीसिन बन आत्म-शोधन का कार्य करता है और हम दोष मुक्त हो जाते हैं।

आत्म-चिंतन के लिए एकाग्रता जरूरी

सभी वस्तुएँ नीचे भागने की प्रवृत्ति रखती है। मन को भी नीचे भागने की आदत पड़ी हुई है। वह अनचाहे भी भोग की तरफ भागना चाहता है। ऊपर की ओर इसे चढ़ाना पड़ता है। यह चढ़े कैसे ? आत्म-चिंतन की रस्सी द्वारा। और इस रस्सी को स्थिर रखने के लिए चाहिए परमात्म-चिंतन की धूरी। आत्म-चिंतन के लिए एकाग्रता का होना जरूरी है। इस रस्सी और धूरी के बिना मन इधर-उधर भटकना बंद नहीं कर सकता, क्योंकि उसे भटकने की आदत पड़ी है। जब एकाग्र होते हैं तब मन भटकना बंद कर देता है और हम तब आत्म-निरीक्षण सहजतापूर्वक सम्पन्न कर लेते हैं। एकाग्रता का मतलब है एक अर्थात् परमात्मा और अग्र अर्थात् सम्मुख यानी परमात्मा के सम्मुख रहने को ही एकाग्र होना कहते हैं। सम्मुख रहना या याद करना बात बराबर है। जब हम उसे याद करते हैं तो मानों अपने में वह बल भरते हैं जिसके बूते पर हम आत्म शोधन कर पाएं।

आत्मचिंतन द्वारा अतीन्द्रिय सुख

वास्तविक और सच्चा सुख वास्तव में आत्म चिंतन द्वारा ही संभव है। आज हमें जो सुख प्राप्त हो रहा है वह इन्द्रिय सुख है और इन्द्रियों के सुख में सम्पूर्णत्व सुख मिल नहीं सकता है। नैन-रस, कर्ण-रस आदि इन्द्रिय सुख है। इन्द्रिय सुख में सुख की लालसा कभी तृप्त नहीं होती। क्योंकि जब एक इन्द्रिय सुख का अनुभव करती रहती है तो दूसरी उदासीन रहती है। वास्तव में इन कर्मेन्द्रियों से परे जो सुख है वही वास्तविक सच्चा सुख है और उसका नाम है अतीन्द्रिय सुख, जो डायरेक्ट आत्मा प्राप्त करती है। अति अर्थात परे और इन्द्रिय अर्थात् कर्मेन्द्रियों से परे सुख। यह सुख वही प्राप्त कर सकता है जो आत्म स्वरूप में टिक पाता हो और आत्म स्वरूप में टिकने के लिए आत्म चिंतन की आवश्यकता है।

आत्मचिंतन द्वारा अतीन्द्रिय सुख हम तीन प्रकार से प्राप्त करते हैं। एक तो आत्म स्वरूप में टिककर, देहभान से ऊपर उठकर जिसे बीज रूप अवस्था कहते हैं। दूसरे स्वदर्शन चक्र घुमाकर। जैसे स्वप्न में सूक्ष्म शरीर द्वारा अनेक जगहों का सैर कर लेते हैं, वैसे ही चिंतन द्वारा सतयुग में पहुँचना, देवताई शरीर द्वारा पुष्पक विमान पर घूमने की कल्पना आदि कर पुलकित होना। सत-युग से लेकर अब तक का सभी रूपों और फिर आने वाले युग में अपना पद देखकर आनन्दित होना ही स्वदर्शन चक्र फिराना है। तीसरा फरिश्ता रूप द्वारा। इसमें सूक्ष्म शरीर द्वारा सूक्ष्म वतन में परमात्मा के साथ मीठा-मीठा वार्तालाप कर अतीन्द्रिय सुख प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस दुनियाँ में भी सुख शांति पाना आसान है मगर केवल आत्म-चिंतन द्वारा ही यह संभव है। अपनी दिनचर्या में आत्म चिंतन का भी स्थान हो जिसके द्वारा हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि आसुरी संस्कारों से मुक्त होकर दैवी गुणों जैसे प्रेम, उदा-रता, सरलता, नम्रता आदि से भरपूर हो देव पद प्राप्त करें। अत: दैनिक जीवन में आत्म-चिंतन की निहायत आवश्यकता है। ○

ईश्वरीय सौगात

ब्र० कु० चम्पालाल, सिरोही (राज०)

यह बात सन् १९७८ की है जिस घड़ी मुझे दिव्य और अलौकिक जीवन की अनमोल सौगात मिली।

पूर्व जीवन विकारों से भरपूर

वैसे मेरा लौकिक गाँव भीमाना (आबूरोड) के पास है परन्तु सन् १९७१ में सिरोही (आबूपर्वत) का जिला मुख्यालय है वहाँ ही सी० जे० एम० कोर्ट में सर्विस कर रहा था उस समय मेरी मानसिक स्थिति सदा उलझी रहती। मेरे अन्दर आलस्य एवं क्रोध ने पूरा ही अधिकार जमा रखा था। उस समय आफिस (दफ्तर) या घर मेरे लिए युद्ध का मैदान बन गया था। अपने मन पर से बिल्कुल अधिकार खो कर हर आत्मा से लड़ाई मोल लेना मेरे लिये सहज बन गया था। मुझे सदा अभिमान रहता कि मैं भी अफसर हूं, झुकना या प्यार से किसी को समझाना यह गुण मेरे से कोसों दूर था। मेरे परिवार वाले मेरे स्वभाव से अशान्त रहते, मैंने कभी अपने जीवन में अमृतवेला का अनुभव नहीं किया था। गाँव में भी हमारे लौकिक परिवार से जिस व्यक्ति से दुश्मनी थी उस पर मैंने मुकदमा किया था, कभी-कभी उसका (मरडर) करने का भी संकल्प आ जाता। मानो सर्व प्रकार से अपने जीवन को विकारों के सागर में बहाता जा रहा था। लेकिन शास्त्रों में भगवान के महावाक्य अनुसार मेरे अतिदुःख का अन्त सहज ही हुआ। आप कहेंगे कैसे ?

अनोखा ज्ञान

सन् १९७८ में सिरोही में एक आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया, जहाँ हजारों लोग उस भव्य मेले को देख रहे थे। मैं आत्मा भी वहाँ पहुँची। मेले में प्रवेश करते ही जैसे परमात्मा ने मेरे ऊपर जादू फैला दिया। मैं हर चित्र को गहराई से देखता रहा। यह नया ज्ञान दिखाई पड़ रहा था। जैसे ही मैंने शिव और शंकर के रहस्य को समझा तो मुझे बहुत ही खुशी हुई। आज तक शिव और शंकर के अन्तर का ज्ञान किसी ने नहीं सुनाया था, मेरे मन के अन्दर अनेक विचार उत्पन्न हुए। मेरी बुद्धि झूठ और सच का निर्णय करने लगी, मुझे यह ज्ञान एक चुम्बक की तरह आकर्षित करने लगा। कुछ आध्यात्मिक किताबें भी खरीदीं। मैं सब कार्यों को छोड़कर इन किताबों का अध्ययन करने लगा। मैंने अपना नाम योग शिविर में भी नोट करवाया। योगशिविर ने मेरे मन पर गहरी छाप डाली। मुझे सात दिन में इतनी शान्ति की अनुभूति हुई जिसका वर्णन किन शब्दों में करूं, ऐसी शान्ति बीते हुये जीवन में कभी भी प्राप्त नहीं हुई थी। मेरा मन बार-बार उस मेले की तरफ ही खींचा जा रहा था। योग-शिविर और ज्ञान शिविर का कार्यक्रम समाप्त हुआ। बाद में मेरे मन में संकल्प आया। यह शान्ति मेरे जीवन में सदा स्थायी कैसे रहेगी। लेकिन ईश्वर को मेरी जैसी आत्मा को सत्यता का संग कराकर श्रेष्ठ बनाना चाहा। सो मेले के बाद शीघ्र ही आश्रम खुल गया।

मैं हर रोज नियमित आश्रम में जाने लगा। मेरे जीवन में अब नया मोड़ आ गया। मेरी बुद्धि में खुशी की लहरें उठने लगीं, मुझे यह उमंग आने लगा कि सर्वआत्माओं को इस श्रेष्ठ ज्ञान के द्वारा नई रोशनी दूँ। भटकती आत्माओं को सहारा दूँ। इस उमंग को लेकर मैंने अपने आफिस में ज्ञान चर्चा करनी शुरू की। लेकिन सचमुच सत्य ज्ञान को पहचानना भी भाग्य की बात है। अपने साथियों को ज्ञान सुनाता तो वे विपरीत बातें करते, मेरे दिल में आता इस श्रेष्ठ ज्ञान की लोग बुराइयां क्यों करते हैं। वैसे मैं न्यायालय में काम करता, इस कारण मेरे तर्क के संस्कार बन गये। मैं लोगों से खूब तर्क करता। जब वह मुझे सन्तुष्ट नहीं कर सकते तब मुझे लगता कि सचमुच कोटों में से कोई

और कोई में से भी कोई 'मैं आत्मा हूं' जिसने भगवान को पहचाना है। मुझे अच्छी तरह से यह ज्ञान था कि सही रास्ते पर जाने वाले को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मैंने यह दृढ़ संकल्प किया है कि मुझे अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना है। मेरे जीवन में परिवर्तन के आधार से मेरी लौकिक पत्नी भी खुश हुई। शुरू-शुरू में वह भी लोगों की बातों में आ गई। मेरे स्वभाव के कारण उसकी मेरे पर बस नहीं चल सकी अब मैं नियमित ज्ञान स्नान करने लगा।

अलौकिक परिवर्तन

अब मेरे भाग्य का सितारा और चमका, तीन महीने के बाद में आबू पर्वत योग शिविर करने गया। वहाँ दादीजी और दीदीजी के अति स्नेह और शक्ति रूप को देख मुझे अपने माता-पिता से भी ज्यादा प्यार मिला। मधुबन तपोभूमि के वातावरण ने मेरे मन को मोह लिया। वहाँ पांचों विकारों का दान देकर आ गया। वैसे बहनों ने मुझ आत्मा से शराब, सिगरेट, लहसुन, प्याज, वगैरह तो पहले ही छुड़वा दिया था। अब मेरे जीवन के अन्दर सुख, शान्ति, समृद्धि सब कुछ है। जब अपने प्यारे अव्यक्त बाप-दादा से पहली बार मिला तो मुझे ऐसे अनुभव होने लगा कि "पाना था सो पा लिया अब कुछ पाना नहीं" कभी कभी मुझे अपने बीते दिनों की याद आती तो दिल से प्यारे बाबा का और अलौकिक बहनों का बार-बार शुक्रिया अदा करता जिन्होंने मेरे जीवन को कौड़ी से हीरे तुल्य बनाया। पहले मुझे अपने घर आने की इच्छा नहीं करती थी। अब मेरा घर आश्रम एवं मन्दिर की तरह है जिसमें हमारे परिवार के सभी सदस्य सुबह शाम ज्ञान स्नान करते हैं। अब मेरा घर आश्रम बन गया है। मेरे दुश्मन भी दोस्त बन गये हैं। मेरे घर पर जो अतिथि आता है उन्हें शिव बाबा की ओर से ज्ञान पान कराता हूं एवं कलेण्डर की सौगात देता हूं। जिससे मेरी तरह सर्वआत्मायें भी अपने जीवन को कमल-पुष्प समान श्रेष्ठ बना सकें। □

गीत

ब्र० कु० मोहन, अमृतसर

युवा तू बन सर्व महान
तू है सारे जग की शान
शिव पिता की आश तुम्हीं पे
तू कर विश्व का कल्याण
१—तुझमें शक्ति शिव की समाई
तू निर्बल का सहारा है
जन-जन को तुम्हें पावन करना
शिव ने आज पुकारा है
तेरे अंग-अंग में गूंजेगा
फिर से गीता का ज्ञान
युवा तू.....
२—छोटे और बड़ों ने लगाई
युवक पर ही आश है
युवक तू जग जाये तो
विश्व शान्ति पास है
उठ युवा सेवा में जग जा
शिव पिता की बात तू मान
युवा तू.....
३—गुणों की खान तुम हो युवा
तुम शिव का वरदान हो
आने वाली नव पीढ़ी की
युवा तुम ही आन हो
हर आँख देखे तुझको
तेरे ही ऐसे हों कर्म महान
युवा तू.....

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

आबू पर्वत—समाचार मिला है कि निम्न सेवाकेन्द्रों ने शिव जयन्ती पर विशेष सेवाएं की। ये सेवाकेन्द्र पुरस्कार के पात्र हैं।

भावनगर—सेवाकेन्द्र के भाई बहिनों ने बहुत ही उमंग हुल्लास के साथ १० ग्रुप बनाकर पूरे शहर में घेराव डाल एक ही दिन में दस स्थानों पर प्रदर्शनी के आयोजन किये तथा शहर के नामीग्रामी प्रतिष्ठित व्यक्तियों से हरेक प्रदर्शनी का उद्घाटन कराया। शान्ति यात्रा निकाली गई। रेडियो तथा ३ समाचार पत्रों में विस्तार पूर्वक समाचार प्रसारित तथा प्रकाशित हुए।

कटक—सेवाकेन्द्र के युवा भाइयों ने विशेष साईकिल द्वारा १५० किलोमीटर की एरिया में स्थित लगभग १०० छोटे-बड़े गांवों में जाकर बाबा का पैगाम दिया। किसी स्थान पर पर्चे बांटे तो किसी स्थान पर प्रदशनी का आयोजन किया।

अहमदाबाद—मणीनगर सेवाकेन्द्र द्वारा शिव जयन्ती के अवसर पर शहर के मुख्य १५ मन्दिरों में शिवरात्रि के दिन प्रदर्शनियां लगाकर हजारों भक्त आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया। शहर के प्रसिद्ध वेद मन्दिर के महन्त सेवाकेन्द्र पर पधारे तथा दो स्थानों पर उनके शुभ हस्तों से ध्वज फहराया गया।

नागपुर—शिवरात्रि के दिन ११ मन्दिरों में प्रदर्शनियां लगाई गईं। जिसमें एक प्रदर्शनी ५ दिन तक चली। इसके साथ-साथ योग शिविरों के आयोजन द्वारा अनेक आत्मायें नियमित क्लास कर रहीं हैं। कई स्थानों से सेवा करने के निमन्त्रण प्राप्त हुए हैं।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)—सेवाकेन्द्र द्वारा शिवरात्रि के पूर्व गांव-गांव में सेवाएं प्रारम्भ की गईं। ५-५ का ग्रुप बनाकर लगभग ११ गांवों में प्रदर्शनियों के आयोजन हुए। शिवरात्रि के दिन दो स्थानों पर प्रदर्शनी चली। इस प्रकार शिवरात्रि सप्ताह में हजारों आत्माओं को सन्देश दिया गया।

दिल्ली मजलिस पार्क—१० फरवरी से १० माच तक सेवाओं का लक्ष्य लेकर सेवायें प्रारम्भ हुई १२ स्थानों पर प्रदर्शनी तथा प्रवचन के कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के समाचार मिले हैं। प्रतिदिन लगभग १ हजार आत्माओं को सन्देश अलग-अलग एरिया में दिया जा रहा है।

अमरावती—सेवाकेन्द्र द्वारा तीन दिन के लिए भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये—जिसमें महाशिवरात्रि नृत्य नाटिका, शान्ति प्रदर्शनी, युवा रैली, प्रवचन माला, धर्म सम्मेलन, छोटे बच्चों का शान्ति सम्मेलन तथा स्वर्ग में एक सीट खाली नाटक आदि भिन्द-भिन्न प्रोग्राम करके हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

पुरी—सेवाकेन्द्र द्वारा दूर-दूर के स्थानों पर जाकर ६ गांवों के प्रसिद्ध मन्दिरों में प्रदर्शनियों के आयोजन किये गये। प्रवचन द्वारा भी हजारों आत्माओं को सन्देश मिला।

बनारस—सेवाकेन्द्र द्वारा ५ बड़े मुख्य घाटों पर एक दिन में प्रदर्शनी लगाकर हजारों भक्त आत्माओं को शिव सन्देश दिया गया। अखबारों में लेख प्रकाशित किये गये।

कृष्णानगर, लक्ष्मीनगर (दिल्ली)—प्राप्त समाचार के अनुसार इन दो सेवा केन्द्रों ने मिलकर प्यारे शिव बाबा का अलौकिक ४९ वें जन्म दिन के उपलक्ष्य में ४९ दिनों में ४९ कार्यक्रम करने का संकल्प किया। इन दिनों में २७ आध्यात्मिक प्रदर्शनियां, १६ प्रवचन, १ फिल्म शो, २ स्कूलों में तथा ३ मन्दिरों में ४९ कार्यक्रम किए गए। हजारों आत्माओं ने परिचय प्राप्त किया। साहित्य से भी काफी सेवा हुई।

बरनाला—में विश्व शान्ति महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अनेकों आत्माओं ने शांति के सागर परमात्मा शिव का परिचय लिया और साथ ही साथ बरनाला में एक नये राजयोग भवन का शिलान्यास राजयोगिनी दादी चन्द्रमणी के कर कमलों द्वारा रखा गया।

आगरा—प्राप्त समाचार के अनुसार आगरा के विशाल भवन 'सूरसदन' में विश्व शान्ति महासम्मेलन का आयोजन बहुत ही सफल रहा। इस सम्मेलन का उद्घाटन शिक्षा राज्य मंत्री डा० कृष्णवीर सिंह कौशल जी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम और "कल का विश्व" नाटक भी प्रस्तुत किया गया।

बम्बई सान्ताकुज—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र के १० वें वार्षिक उत्सव पर एक विशाल शान्ति यात्रा का कार्यक्रम रखा गया। इस शान्ति यात्रा का प्रारम्भ पोदार स्कूल से हुआ। सान्ताकुज तथा खार के मुख्य-मुख्य स्थानों से यह शान्ति यात्रा "शान्ति का सन्देश देते हुए गुजरी। इस शान्ति यात्रा की विशेष शोभा थी तीन झांकिया। जिसमें यज्ञ कुण्ड, स्वर्ग का मनोरम दृश्य तथा घूमता हुआ विश्व का गोला दर्शाया गया था। जो हरेक के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु था।

दिल्ली शक्तिनगर—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र की ओर से दिल्ली विश्व विद्यालय से सम्बन्धित एक हॉस्टल ग्वायर हाल में प्रवचन तथा स्लाईड शो का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें ७० विद्यार्थियों तथा ४ प्रोफेसर्स ने भाग लिया। प्रवचन के पश्चात विद्यार्थियों ने कुछ प्रश्न भी पूछे—ब्र०कु० बहनों ने उनके सन्तोषजनक उत्तर दिये।

दिल्ली राजयोग भवन—प्राप्त समाचार के अनुसार रजोरी के राजयोग भवन में डाक्टर्स के लिए एक स्नेह मिलन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें नामी-ग्रामी ३० डाक्टर्स ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का विषय था "राजयोग द्वारा बीमारियों को सहन करने की शक्ति कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे—भारतीय चिकित्सक संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष भ्राता के० एल० तुली जी। तथा ग्याना के भारत स्थित उच्चायुक्त स्टीवनारायण जी।

पटियाला—सेवाकेन्द्र द्वारा सार्वजनिक कार्यक्रम पटियाला के प्रसिद्ध स्थान किशन नगर धर्मशाला में आयोजित किया गया। "दैनिक चढ़दी कला तथा दैनिक नवीं सवेर" में शिवरात्रि से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए। स्थानीय सभी समाचार पत्रों में कार्यक्रम की सूचना छपती रही। जिसके फल स्वरूप शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने शिव पिता का सत्य परिचय प्राप्त किया।

नांदेड—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र से १० कि० मी० दूर शिव मन्दिर महाकालेश्वर विष्णुपुरी में शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर केन्द्रीय गृहमंत्री माननीय शंकरराव चौहान जी की धर्मपत्नी कुसमताई चौहान जी पधारीं तथा प्रदर्शनी का अवलोकन किया। अनेक आत्माओं को ई० सन्देश मिला।

कानपुर—नयागंज सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि जिला सीतापुर के मिश्रिख गांव में १५ दिन के लिए आयोजित एक होली मेले में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध महन्त देवदत्त गिरी जी ने झण्डा लहराकर किया। इस मेले के प्रारम्भ में एक शोभा यात्रा भी निकाली गई। प्रदर्शनी द्वारा हजारों भक्त आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

गोवा—समाचार मिला है कि होली महोत्सव पर सरकार द्वारा ३३ झांकियों का प्रदर्शन किया गया था, जिसमें ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से "सर्व धर्म आत्माओं के पिता" की चैतन्य झांकी सजाई गई। ४० राजयोगी भाई बहिनें इस झांकी के आगे-आगे शिव बाबा के झण्डे तथा स्लोगन्स के बैनर लेकर चल रहे थे। इस झांकी द्वारा अनेक आत्मायें परमात्मा पिता का सन्देश ले रही थीं। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष्य में यहाँ के प्रसिद्ध ब्रागांझा हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया—जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में महात्मा उज्वलानंद जी पधारे। साथ-साथ नवप्रभा अखबार के सहसंपादक भ्राता बलदेव जी मुख्य अतिथि थे।

मेरठ—सेवाकेन्द्र की ओर से लीला हांडा इन्टरकालेज कंकड खेड़ा में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कालेज के पूरे स्टाफ के लोगों ने विशेषकर प्रदर्शनी का लाभ लिया।

सिकन्द्राबाद (यू० पी०)—समाचार मिला निकटवर्ती दो गांवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के आयोजन किये गये। शहर के मुख्य मार्गों से प्रभातफरी निकाली गई, इस प्रभातफेरी में आगे-आगे बैन्ड पीछे ५० बच्चे शिवबाबा की झण्डिया लेकर पैदल मार्च कर रहे थे।

आनंद—(गुजरात) सेवाकेन्द्र की ओर से बाकरोल गांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग शिविर तथा राजयोग

फिल्म के आयोजन द्वारा हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। भोगरी गीता पाठशाला के तृतीय वार्षिक उत्सव पर वहाँ की प्रसिद्ध धर्मशाला में दो दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

अमृतसर—प्राप्त समाचार के अनुसार-अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अन्तर्गत युवा उत्थान प्रदर्शनी एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसके लिए पहले से ही निमंत्रण पत्र तथा पर्चे छपवाकर बांटे गये। नगर के प्रसिद्ध टाउन हाल में भ्राता बी० एस० मुल्लर असिस्टेन्ट कमिश्नर म्युनिसिपल कारपोरेशन अमृतसर द्वारा प्रदर्शनी का उद्-घाटन हुआ। इस प्रदर्शनी से विशेषकर युवा वर्ग ने लाभ प्राप्त किया। दो दिवसीय सम्मेलन में अमृतसर के लोकप्रिय नेता भ्राता बलदेव प्रकाश जी पधारे।

डीसा—समाचार मिला है कि लाइनज़ क्लब के सहयोग से तीन द्विवसीय "युवा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसको शहर के नामीग्रामी प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अलावा गुजरात राज्य के बांधकाम मंत्री भ्राता खोडीयान जी एवं नव निर्वाचित संसद सदस्य भ्राता बी० के० गढ़वी जी ने देखी।

रांची—सेवाकेन्द्र की ओर से २२ कि० मी० दूर "और मांझी-प्रखण्ड" के महावीर मन्दिर शास्त्री चौक में दो दिवसीय विश्व शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन महालक्ष्मी फार्इवर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज लिमिटेड "ओरमांझी" के चीफ इंजीनियर भ्राता महेश चन्द्र जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

दिल्ली-पहाड़गंज—समाचार मिला है कि नई दिल्ली सेवाकेन्द्र की ओर से इस मास क्नाट प्लेस के समीप बंगाली मार्केट में दो दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस एरिया में पहली बार यह प्रदर्शनी की गई, अनेक आत्माओं ने प्रदर्शनी देखी एक कम्युनिटी हाल में साप्ताहिक पाठ्यक्रम कराने का निमन्त्रण मिला। एक और प्रदर्शनी पहाड़गंज के एक प्रसिद्ध क्षेत्र मुल्तानी ढांडा में की गई जिसे भारी संख्या में महिलाओं तथा पुरुषों ने देखा।

आपको कितना मालूम है ?

ब्र० कु० कमलमणि, देहली

१. पूरे ड्रामा में किनकी ग्लानि बिल्कुल नहीं होती।
(अ) श्री कृष्ण की (ब) शिवबाबा की
(स) लक्ष्मी नारायण की (द) ब्रह्मा की

२. दुनिया वालों ने शिव और शंकर को एक मिला दिया जबकि तुम बच्चों ने किसको एक मिला दिया ?
(अ) शिव और शक्ति को
(ब) आत्मा और परमात्मा को
(स) बाप और दादा को
(द) श्री लक्ष्मी और श्रीनारायण को

३. पूरे ड्रामा में मोहजीत राजा का पार्ट किसने बजाया है ?
(अ) राजा विक्रमादित्य (ब) राजा जनक
(स) राजा विकर्माजीत
(द) श्री नारायण

४. संसार में सबसे ज्यादा मूर्तियाँ किसकी बनी हुई हैं ?
(अ) शिव की
(ब) लक्ष्मी नारायण की
(स) देवीलों की
(द) सालिग्रामों को

५. भगवान सबसे पहले किस देश में आए ?
(अ) भारत में
(ब) पाकिस्तान में
(स) मगध में (द) सिन्ध में

१. श्री लक्ष्मी नारायण की
२. बाप और दादा को
३. श्री लक्ष्मी नारायण
४. सालिग्रामों की
५. मगध में

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा भारत मुद्रणालय, शाहदरा दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70